संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

शहर समता

वर्ष-22 अंक- 325
पृष्ठ 8
शनिवार
15 अगस्त 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

प्रयागराज से प्रकाशित   Email : shaharsamta@gmail.com   Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- वर्किंग वूमेन दमकती त्वचा...
विचार- ओ भूले बिसरे नायक, तुम्हें शत शत..
खेल- गुरनूर और प्रसिद्ध में किसे...

विभाजन विभीषिका दिवस : बंटवारे के जख्मों को याद कर पीएम भावुक, बोले

अपनों से बिछड़ लाखों लोगों ने खड़ी की जिंदगी

नई दिल्ली,एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस पर 1947 के विभाजन से प्रभावित लोगों के साहस, संघर्ष और जिजीविषा को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि विभाजन ने लाखों परिवारों को उजाड़ दिया और लोगों को असहनीय पीड़ा दी, लेकिन प्रभावित लोगों ने विपरीत परिस्थितियों में भी नई जिंदगी शुरू की और देश के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। पीएम ने भाईचारे, सद्भाव और विकसित भारत के निर्माण के संकल्प को मजबूत करने का आह्वान किया। पीएम मोदी ने एक्स पर लिखा, श्आज हम शविभाजन विभीषिका स्मृति दिवसश मना रहे हैं। हम उन सभी लोगों के साहस को याद करते हैं, जो विभाजन से प्रभावित हुए थे। यह इतिहास का वह दौर था, जिसने कई जिंदगियां तहस–नहस कर दीं। परिवार उजड़ गए, अपनों को खो दिया और लोगों ने बहुत दुख सहा। साथ ही, इन मुश्किलों से उबरते हुए लोगों ने शून्य से अपनी जिंदगी फिर से शुरू की, कठिनाइयों को सफलता में बदला और देश की तरक्की में बड़ा योगदान दिया। उन्होंने कहा कि तमाम मुश्किलों के बावजूद लोगों ने शून्य से अपनी जिंदगी दोबारा बनाई। उन्होंने विषम परिस्थितियों को अपनी ताकत बनाया, मुश्किल हालात को कामयाबी में बदला और देश की प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया। पोस्ट में लिखा था, श्उनकी जीवन यात्राएं हमें इंसानी जज्बे की ताकत की याद दिलाती हैं। यह दिन हमारे देश में भाईचारा और सद्भाव बनाए रखने के हमारे संकल्प को और मजबूत करे और हम सब मिलकर विकसित भारत बनाने की दिशा में काम करें। भारत 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस मनाता है, ताकि 1947 में देश के विभाजन के दौरान जान गंवाने वाले और विस्थापित हुए लोगों को श्रद्धांजलि दी जा सके।

भारत को 15 अगस्त, 1947 को ब्रिटिश शासन से आजादी मिली। हर साल 15 अगस्त को मनाया जाने वाला स्वतंत्रता दिवस किसी भी देश के लिए खुशी और गर्व का अवसर होता है। हालांकि, आजादी की इस खुशी के साथ विभाजन का गहरा दर्द भी जुड़ा था। नए आजाद भारतीय राष्ट्र के जन्म के साथ ही विभाजन की हिंसा और त्रासदी सामने आई, जिसने लाखों लोगों के मन पर गहरे और कभी न मिटने वाले घाव छोड़ दिए। विभाजन के कारण मानव इतिहास के सबसे बड़े विस्थापनों में से एक हुआ।

छात्र गलत हों, तब भी उन्हें विरोध का अधिकार : सीजेआई

नई दिल्ली,एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को हैदराबाद की लॉ यूनिवर्सिटी, NALSAR से जुड़े विवाद पर काउंसिल ऑफ इंडिया (BCI) को फटकार लगाई। CJI सूर्यकांत ने कहा कि भले ही छात्रों का फैसला गलत हो या उन्हें किसी ने गलत सलाह दी हो, फिर भी उन्हें अपनी बात रखने और विरोध करने का अधिकार है। जस्टिस सूर्यकांत ने BCI के उस सर्कुलर पर भी नाराजगी जताई जिसमें NALSAR के 2026 बैच के लॉ ग्रेजुएट्स का वकील के तौर पर एनरोलमेंट रोकने को कहा गया था। CJI ने कहा– यह मेरे और छात्रों के बीच का मामला है। इसे मुद्दा बनाने की जरूरत नहीं थी। बार काउंसिल इसमें दखल देने वाला कौन होता है? सुप्रीम कोर्ट ने बार काउंसिल ऑफ इंडिया को नोटिस भी जारी किया और यूनिवर्सिटी के किसी छात्र या फैकल्टी के खिलाफ दंडात्मक कार्रवाई नहीं करने का आदेश दिया। NALSAR के करीब 450 छात्र जस्टिस सूर्यकांत को दीक्षांत समारोह 2026का चीफ गेस्ट बनाए जाने का विरोध कर रहे हैं। NALSAR यानी नेशनल एकेडमी ऑफ लीगल स्टडीज एंड रिसर्च, हैदराबाद की लॉ यूनिवर्सिटी है। यहां करीब 1,400 छात्र पढ़ते हैं। इनमें से करीब 450 छात्रों ने यूनिवर्सिटी प्रशासन को पत्र लिखकर CJI को चीफ गेस्ट बनाने का न्योता वापस लेने की मांग की थी। समारोह की तारीख अभी तय नहीं है। छात्रों की नाराजगी CJI की पिछले महीने की एक टिप्पणी को लेकर थी।

भारत की सहनशीलता को कमजोरी न समझें-अजित डोभाल

नई दिल्ली,एजेंसी। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल ने कहा है कि भारत की उदारता और सहनशीलता को उसकी कमजोरी नहीं समझना चाहिए। उन्होंने बताया कि ऑपरेशन सिंदूर का मुख्य उद्देश्य पहलगाम आतंकी हमले से जुड़े आतंकी ठिकानों को नष्ट करना था। इसके साथ ही उन्होंने जोर देकर कहा कि देश जोखिम उठाने और कड़ा प्रहार करने की क्षमता रखता है, भले ही उसके परिणाम कुछ भी हों। डिस्कवरी की आने वाली डॉक्यूमेंट्री सीरीज डिक्लासिफाइड ऑपरेशन सिंदूरश में बातचीत के दौरान डोभाल ने कहा कि 88 घंटे तक चले इस सैन्य अभियान का मकसद दुश्मन के उन आतंकी ठिकानों को नष्ट करना था, जो खास तौर पर पहलगाम आतंकी हमले के लिए जिम्मेदार थे। ऑपरेशन सिंदूर के बाद अपने पहले इंटरव्यू में डोभाल ने कहा,श्हमने ऑपरेशन का मकसद दुश्मन के कैंपों को नष्ट करना तय किया था, खासकर उन कैंपों को जो पहलगाम हमले के लिए जिम्मेदार थे। उन्होंने आगे कहा कि दुनिया के लिए संदेश बहुत साफ है भारत की उदारता या सहनशीलता को उसकी कमजोरी नहीं समझना चाहिए। भारत जोखिम उठा सकता है, भारत कड़ा प्रहार कर सकता है, चाहे नतीजे कुछ भी हों।

शांति बिगाड़ना चाहते हैं कुछ ताकतें –सुखबीर बादल

`नांदेड़,एजेंसी। क्या पंजाब में फिर अशांति फैलाने की कोशिश हो रही है? नांदेड़ में कृपाण से हमले के एक दिन बाद शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल ने बड़ा बयान दिया है। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ ताकतें पंजाब और देश में शांति नहीं चाहतीं। उन्हें लगता है कि अकाली दल उनके रास्ते में बाधा है। सुखबीर बादल ने कहा कि जैसे उनके पिता और पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल ने ऐसी ताकतों के सामने समझौता नहीं किया, वैसे ही वह भी नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि वह पंजाब में भाईचारा और शांति बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं। सुखबीर बादल ने कहा कि उन्हें दो बार सिख धर्म के सबसे पवित्र स्थलों में निशाना बनाने की कोशिश हुई। उन्होंने बताया कि पहली घटना अमृतसर के स्वर्ण मंदिर में हुई थी और दूसरी बार नांदेड़ के तख्त हजूर साहिब स्थित माता साहिब देवन जी गुरुद्वारे में हमला हुआ। उन्होंने कहा, श्दोनों बार उन्होंने मुझ पर सबसे पवित्र स्थानों पर हमला किया। बादल ने पंजाबी कहावत का जिक्र करते हुए कहा, जिसके सिर पर गुरु साहिब का हाथ हो, उसे कोई आंच नहीं आती। उन्होंने गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज का ध न्यवाद किया और कहा कि यह उनकी धरती है।

शुभकामना

स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर समस्त नागरिकों, सुधी पाठकों, विज्ञापनदाताओं एवं शुभेच्छुओं को हार्दिक शुभकामनायें।

–सम्पादक

सूचना

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में प्रेस व कार्यालय में अवकाश रहेगा। अतः अगला अंक 17 अगस्त को प्रकाशित होगा।

–व्यवस्थापक

पार्थिव शिवलिंग निर्माण महाअभियान में राष्ट्रभक्ति का संगम

प्रयागराज। अध्यात्म की नगरी में छह वर्षीय श्रीश बाहुबली महाराज के संकल्प से चल रहे 11 लाख पार्थिव शिवलिंग निर्माण महाअभियान के चौथे दिन बृहस्पतिवार को श्रद्धा, भक्ति और राष्ट्रभक्ति का संगम देखने को मिला। लोगों ने उत्साहपूर्वक

पार्थिव शिवलिंग का निर्माण किया। इसी दौरान तिरंगा यात्रा शृंग्वेरपुरधाम पहुंची। लोगों को शिवभक्ति, भारतीय संस्कृति और सनातन परंपराओं से जोड़ने का प्रयास किया है। आयोजक दीपा मौर्य ने आभार जताया। इस मौके पर मोनू मिश्र, पप्पू त्रिपाठी, अनुज पांडेय और वरुण दुबे आदि रहे।

राज्य सफाई कर्मचारी आयोग कर्मचारियों के हित में : रमेशचंद्र

प्रयागराज। राज्य अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति आयोग के सदस्य रमेशचंद्र कुंडे ने नगर पंचायत कार्यालय का निरीक्षण किया। उन्होंने कार्यालय के कामकाज व पत्रावलियों को देखा। आयोग के सदस्य ने कार्यालय में कार्यरत सफाई कर्मचारी गणेश कुमार, मनोज कुमार, रोहित कुमार, संतलाल, सुनील कुमार आदि से मुलाकात कर उनके दैनिक कार्यों की समीक्षा

की। आयोग सदस्य रमेशचंद्र कुंडे ने बताया कि राज्य सरकार की ओर से उत्तर प्रदेश राज्य सफाई कर्मचारी आयोग का गठन किया गया है, जो कर्मचारियों के अधिकारों व हितों की रक्षा करता है। मौके पर अधिशासी अधिकारी पद्मजा मिश्रा, कृष्ण कुमार नागर, रामकैलाश यादव, जितेंद्र कुमार, देवराज मौर्य, संजय मौर्य, विश्वनाथ सिंह तथा शिवसेवक सिंह आदि रहे।

वंदे भारत एक्सप्रेस की चपेट में आने से अधेड़ की मौत

प्रयागराज। महरैया गांव के पास लखनऊ से प्रयागराज की ओर जा रही वंदे भारत एक्सप्रेस की चपेट में आने से एक व्यक्ति की मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस व रेलवे सुरक्षा बल के जवान मौके पर पहुंचे और शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। ग्रामीणों के अनुसार, प्रतापगढ़ जिले के हथिगवां के गुलरा बढ़इया गांव निवासी पंचमलाल सरोज (50) पुत्र धनई शराब के नशे में थे। बृहस्पतिवार दोपहर वह महरैया गांव के पास रेलवे लाइन के निकट अचेत पड़े थे। इसी दौरान दोपहर करीब एक बजे तेज रफ्तार से गुजर रही वंदे भारत एक्सप्रेस की चपेट में आने से उनकी मौत हो गई। हादसे की खबर मिलने पर पुलिस और आरपीएफ के जवानों ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। पुलिस ने मृतक की जेब से मिले आधार कार्ड के आधार पर उनकी पहचान पंचमलाल सरोज के रूप में की। पुलिस ने घटना की जानकारी परिजनों को दे दी। घटना के बाद पत्नी सुनीता समेत परिजनों का रो–रोकर हाल बेहाल है।

बहन के घर से लौट रहे बाइक सवार की सड़क हादसे में मौत

प्रयागराज। एक तेज रफ्तार कार की चपेट में आने से बृहस्पतिवार को सुबह बाइक सवार व्यक्ति की मौत हो गई। युवक बहन के घर से लौट रहा था। करछना थाना क्षेत्र के मुंगारी गांव निवासी पंकज झा (48) बारा क्षेत्र के कपड़ौरा गांव में अपनी बहन के घर गए थे। सुबह लगभग आठ बजे वे बाइक से अपने घर लौट रहे थे। बरेठिया गांव के पास महाराष्ट्र से प्रयागराज जा रही कार ने उनकी बाइक में पीछे से टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि पंकज उछलकर हाईवे के डिवाइडर की ओर जा गिरे। आसपास के ग्रामीणों ने उन्हें तुरंत नजदीकी नर्सिंग होम पहुंचाया, जहां उपचार के दौरान उनकी मृत्यु हो गई। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और परिजनों को घटना की जानकारी देकर शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। दुर्घटनाग्रस्त बाइक और कार को पुलिस ने कब्जे में लेकर कार्रवाई शुरू कर दी है। बताया गया कि कार सवार लोग महाराष्ट्र से प्रयागराज गंगा स्नान के लिए जा रहे थे। कार सवार सभी लोग सुरक्षित बताए जा रहे हैं।

करछना मुख्य मार्ग पर यातायात व्यवस्था ध्वस्त

प्रयागराज। पुलिस चौकी के पास करछना मुख्य मार्ग पर यातायात व्यवस्था ध्वस्त है। शहीद ललऊ मिश्र शहीद स्थल के पास अतिक्रमण के कारण घंटों जाम लगता है। इससे ग्रामीणों, स्कूली बच्चों और राहगीरों को आवागमन में परेशानी होती है। दुकानदारों और ठेले वालों

के अवैध अतिक्रमण से चौड़ा रास्ता संकरा हो गया है। पार्किंग न होने से लोग अपने वाहन सड़क पर आड़े–तिरछे खड़े करते हैं। ई–रिक्शा चालक भी बीच सड़क पर सवारियां उतारते–बैठाते हैं। सुबह और शाम के व्यस्ततम समय में भारी मालवाहक वाहनों के प्रवेश से स्थिति और बिगड़ जाती है। लोगों का आरोप है कि पुलिस चौकी के पास भी यातायात नियमों का उल्लंघन हो रहा है।

कांवड़ यात्रा मार्ग पर चिकन-मटन की दुकानें बंद कराने के खिलाफ याचिका खारिज

प्रयागराज। सावन में अमरोहा की चिकन–मटन दुकानों को बंद कराने के नोटिस के खिलाफ दाखिल जनहित याचिका पर इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सख्त टिप्पणी की। कोर्ट ने कहा कि याचिका पब्लिक इंटरेस्ट में नहीं, बल्कि 'पब्लिसिटी इंटरेस्ट' में दाखिल की गई है। इसके साथ ही अदालत ने याचिका खारिज कर दी।

सावन माह में अमरोहा में चिकन और मटन की दुकानों को बंद कराने के लिए जारी नोटिस को चुनौती देने वाली जनहित याचिका को इलाहाबाद हाईकोर्ट ने शुक्रवार को खारिज कर दिया।

अदालत ने याचिका दाखिल करने वाले अधिवक्ता नासिर फारूक की मंशा पर टिप्पणी करते हुए कहा कि यह याचिका पब्लिक इंटरेस्ट नहीं, बल्कि पब्लिसिटी इंटरेस्ट में दाखिल की गई है।

याचिका में सावन माह के दौरान चिकन शॉप और मटन शॉप बंद कराने के लिए जारी नोटिस की वैधानिकता को चुनौती दी गई थी। उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से अपर मुख्य स्थायी अधिवक्ता रामानंद पांडेय

ने याचिका का विरोध किया। याची की ओर से अधिवक्ता मुस्तकीम अहमद ने अदालत को बताया कि अमरोहा में कांवड़ यात्रा मार्ग से हटकर स्थित चिकन की दुकानों को भी पुलिस ने बिना तारीख के नोटिस जारी कर बंद करा दिया है। इससे बड़ी संख्या में दुकानदारों और इससे जुड़े लोगों की आजीविका प्रभावित हो रही है।

याचिका में दावा किया गया था कि नोटिस में केवल चार सोमवार को दुकानें बंद रखने का उल्लेख किया गया है, लेकिन प्रशासन की ओर से पूरे सावन माह में चिकन और मटन की दुकानें नहीं खुलने दी जा रही हैं। आरोप यह भी था कि कांवड़ मार्ग के अलावा गलियों और अन्य स्थानों पर स्थित दुकानों को भी बंद कराया गया है।

याची ने हाईकोर्ट से हस्तक्षेप करते हुए जारी किए गए अनडेटेड नोटिस को रद्द करने की मांग की थी। याचिका में कहा गया था कि दुकानों के बंद रहने से सैकड़ों लोगों के सामने रोजगार और आजीविका का संकट पैदा हो गया है। हालांकि, सुनवाई के बाद अदालत ने याचिका को खारिज कर दिया।

विभाजन का दंश भयावह, पीड़ादायक किन्तु सचेत करने वाला : प्रो. देवदत्त सरोदे

प्रयागराज। गंगानाथ झा परिसर, प्रयागराज के पण्डित मदन मोहन मालवीय सभागार में विभाजन विभीषिका दिवस पर विचार गोष्ठी का आयोजन सम्पन्न हुआ। विभाजन की त्रासदी को स्मरण करते हुए परिसर के सहनिदेशक प्रो. देवदत्त सरोदे ने विभाजन के पश्चात् उत्पन्न हुई परिस्थिति को मर्मस्पर्शी चित्रों के द्वारा प्रस्तुत करते हुए अपने प्रस्तुतीकरण द्वारा विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया। विभाजन की विभीषिका का हृदयस्पर्शी वर्णन करते हुए उन्होंने उपस्थित जनों को विभाजन के पूर्व उपजी राजनीतिक परिस्थितियों से अवगत कराया। प्रो. देवदत्त सरोदे ने अपने उद्‌बोधन में 1947 की त्रासदी के पूर्व पाकिस्तान के शहर मुल्तान, लाहौर इत्यादि के सामाजिक तानाबाने का उल्लेख करते हुए इन जैसे शहरों के नागरिकों द्वारा सदियों से दृढ़तापूर्वक अपने धर्म, संस्कृति इत्यादि के पालन करते रहने की सराहना की, जिसे विभाजन की त्रासदी ने एक झटके में खण्डित कर दिया एवं मानवता को शर्मसार करने वाली घटना को जन्म देने वाली नृशंस घटना के रूप में व्याख्यायित किया। प्रो. देवदत्त सरोदे ने भारत के इतिहास एवं उसकी भौगोलिक स्थिति का अत्यन्त सजीव एवं यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करते हुए देश के समक्ष आई चुनौतियों का सजीव वर्णन प्रस्तुत किया। उन्होंने सावरकर के राष्ट्रवाद का विशेष उल्लेख करते हुए उसे राष्ट्र को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण बताया तथा उनकी विचारधारा को राष्ट्रप्रेम की आधारशिला माना। उन्होंने सभी को सचेत करते हुए देश के समक्ष वर्तमान में सामने आ रही चुनौतियों का सावधानी पूर्वक अवलोकन करते रहने एवं किसी भी परिस्थिति का सामना करने को तत्पर रहने का आह्वान किया। प्रो. सरोदे के अनुसार राष्ट्र दर्शन की स्पष्टता नागरिकों हेतु अपरिहार्य एवं अत्यावश्यक बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे परिसर के निदेशक (प्रभारी) प्रो.रामकृष्ण पाण्डेय "परमहंस" ने विभाजन को भारतीय इतिहास के सर्वाधिक त्रासद अध्यायों में से एक बताया। राष्ट्र की पीड़ा का अनुभव करने की बात करते हुए उन्होंने इस दिवस को सचेत रहने की सार्थकता के साथ स्मरण करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने विभाजन की विभीषिका को सदैव स्मरण रखते हुए राष्ट्र के समक्ष आने वाली चुनौतियों का सामना करने को तत्पर रहने का आह्वान किया। इस अवसर पर परिसरीय हॉल में बड़ी स्क्रीन पर विभाजन से सम्बन्धित वृत्तचित्र का प्रदर्शन किया गया। वृत्तचित्र के द्वारा उपस्थित समस्त परिसरीय सदस्यों ने विभाजन की तत्कालीन परिस्थितियों से अवगत कराया। उक्त कार्यक्रम का संयोजन एवं संचालन अंकित मिश्र, सहायकाचार्य द्वारा किया गया। कार्यक्रम में प्रो. अपराजिता मिश्रा, डॉ. सुरेश पाण्डेय, डॉ. यशवन्त कुमार त्रिवेदी, डॉ. राजकुमार, डॉ. रामरूप, डॉ. मोनाली दास, डॉ. अंजनी पुण्डरीक, राजेशकान्त तिवारी समेत समस्त परिसरीय सदस्य, प्राक्शोध पाठ्यक्रम के छात्र–छात्राएँ तथा छात्र–छात्राएँ समुपस्थित रहे।

अमीन रजिस्टर अपडेट रखने के निर्देश

प्रयागराज। तहसील में बृहस्पतिवार को एडीएम आपूर्ति विजय कुमार शर्मा ने विभिन्न कार्यालयों और अभिलेखों का निरीक्षण किया। निरीक्षण में अमीन का रजिस्टर नियमित रूप से अपडेट नहीं मिला। एडीएम ने इसे व्यवस्थित ढंग से अद्यतन रखने और लंबित पत्रावलियों को क्रमवार सुरक्षित रखने के निर्देश दिए। उन्होंने पांच वर्ष से अधिक पुराने उन पट्टों को चिह्नित करने को कहा, जिनमें अब तक संक्रमणीय अधिकार दर्ज नहीं हुए हैं। पात्र पट्टेदारों को अभियान चलाकर संक्रमणीय अधिकार दिलाने के निर्देश दिए। दाखिल–खारिज की स्थिति जांचने के लिए एक से 10 जून तक हुए बैनामों का नमूना परीक्षण कराया जाएगा। एडीएम ने तहसील परिसर की साफ–सफाई का भी जायजा लिया और बाउंड्रीवाल के पीछे उगी घास–फूस हटाने के निर्देश दिए।

350 बोरी खाद, समिति पर पहुंचे एक हजार किसान

प्रयागराज। क्षेत्र में खाद की किल्लत दिनों–दिन बढ़ रही है, जिससे किसान परेशान हैं। बुधवार को लेड़ियारी साधन सरकारी समिति में 350 बोरी खाद पहुंची। बृहस्पतिवार सुबह चार बजे ही हजारों किसान खाद लेने के लिए लाइन में लग

गए। समिति प्रभारी ने लंबी लाइन देखकर पुलिस के बिना खाद वितरण असंभव बताया। किसानों ने आरोप लगाया कि समिति में खाद कम आ रही है। उन्हें एक बोरी से अधिक खाद नहीं मिल पा रही है। निजी दुकानों पर खाद 700 रुपये महंगी मिल रही है। किसानों ने कहा कि रोपाई के महीनों बाद भी खेतों में खाद नहीं पड़ी, जिससे पैदावार प्रभावित होगी। उन्होंने पर्याप्त खाद न मिलने पर सड़क पर उतरने की चेतावनी दी। समिति सचिव अश्वनी कुमार ने बताया कि 350 लोगों को टोकन देकर खाद बांटी जाएगी।

चार दशक के बाद डीही राजबहा नहर में आया पानी

प्रयागराज। किसानों का चार दशक पुराना सपना आखिरकार साकार हो गया है। चार दशक के इंतजार के बाद डीही राजबहा नहर में पानी पहुंचते ही किसानों में खुशी की लहर दौड़ गई।

सिंचाई विभाग के अधीक्षण व अधिशासी अभियंता सत्यप्रकाश चौधरी और अवर अभियंता केशउद्दीन ने नहर का निरीक्षण किया। जयशंकर पांडेय और कृपा शंकर पांडेय ने बताया कि 45 साल से यह नहर सूखी थी। मौके पर बुलबुल यादव, इंद्रजीत यादव, सोनू पांडेय, राम कैलाश, प्रमोद और महेश यादव आदि रहे।

सियासी जमीन मजबूत करने की कवायद, संगठन विस्तार पर जोर

प्रयागराज। बहरिया क्षेत्र के कहली में अपना दल एस कार्यकर्ताओं की मासिक बैठक जोन अध्यक्ष शिव प्रसाद पटेल की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक का संचालन सेक्टर अध्यक्ष अजय पटेल ने किया। बैठक में संगठन को मजबूत करने, कार्यकर्ताओं की सक्रियता बढ़ाने और क्षेत्र में पार्टी की राजनीतिक गतिविधियों को गति देने पर चर्चा हुई। कार्यकर्ताओं ने पार्टी की नीतियों और संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने पर जोर देते हुए कार्यकर्ताओं से पार्टी की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभाने का आह्वान किया गया। बैठक में सेक्टर अध्यक्ष राजपाल पटेल, धीरज पटेल, बलवंत पटेल, चंद्र प्रकाश पाल, जोन अध्यक्ष व्यापार मंच जोखूलाल साहू आदि मौजूद रहे।

पानी के संकट से जूझ रहे ग्रामीण, जलापूर्ति बहाल करने की मांग

प्रयागराज। बहरिया क्षेत्र के तेजपुर गांव में पानी की टंकी से जुड़ी पाइपलाइन फटने के कारण जलापूर्ति नहीं हो पा रही है। जिससे ग्रामीणों को पेयजल के लिए परेशानी का सामना करना पड़ रहा है और दूरदराज के स्रोतों से पानी लाना पड़ रहा है।

ग्रामीणों का आरोप है कि गांव में बिछाई गई पाइपलाइन की गुणवत्ता खराब होने के कारण आए दिन पाइपलाइन क्षतिग्रस्त हो जाती है। पाइपलाइन फटने से टंकी का पानी घरों तक नहीं पहुंच पा रहा है। पाइपलाइन बिछाने के बाद से कई स्थानों पर खराबी की समस्या आती रही है। समय पर मरम्मत न होने से जलापूर्ति व्यवस्था लगातार प्रभावित हो रही है। अशोक कुमार पटेल, उधम सिंह पटेल, रामप्रकाश आदि ग्रामीणों ने उच्च अधिकारियों से शिकायत कर पाइपलाइन दुरुस्त कराने और जलापूर्ति बहाल करने की मांग की है।

अधिवक्ता की कार चोरी से ले जाकर पेड़ से भिड़ाई, बनवाया फर्जी पास

प्रयागराज। कैंट इलाके में एक अधिवक्ता ने साथ रह रहे युवक पर उनकी स्कॉर्पियो चोरी से ले जाकर दुर्घटनाग्रस्त करने और उनके आधारकार्ड का इस्तेमाल कर विधानसभा सचिवालय का फर्जी कार पास बनवाने का आरोप लगाया है। कैंट पुलिस ने शिकायत के आधार पर आरोपी शौर्य प्रताप के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।अधिवक्ता अमित कुमार श्रीवास्तव की तहरीर के मुताबिक, 18 अप्रैल को उनकी गैरमौजूदगी में उनके साथ रह रहे शौर्य प्रताप ने कमरे से स्कॉर्पियो की चाबी निकाल ली और वाहन लेकर चला गया। आरोप है कि ऑकलैंड रोड पर तेज रफ्तार में वाहन चलाने के दौरान स्कॉर्पियो पेड़ से टकरा गई। हादसे में वाहन बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। आरोप है कि हादसे की जानकारी मिलने के बाद आरोपित के परिजनों ने पुलिस में रिपोर्ट न दर्ज कराने का आग्रह किया और स्कॉर्पियो की मरम्मत का पूरा खर्च उठाने का आश्वासन दिया।

दिव्यांग विद्यार्थियों की चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित

प्रयागराज। स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में 14 अगस्त 2026 को बीआरसी नगर क्षेत्र, प्रयागराज में खंड शिक्षा अधिकारी श्रीमती प्रतिभा सिंह की अध्यक्षता में दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें HI, VI, ID एवं Locomotor श्रेणी के 101 दिव्यांग बच्चों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम को रुलोन्स डिस्ट्रीब्यूशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड, प्रयागराज ने

सहयोग देते हुए बच्चों को ड्राइंग पेपर, कलर, पेंसिल, रबर सहित आवश्यक स्टेशनरी उपलब्ध कराई तथा सभी बच्चों को स्वल्पाहार वितरित किया। संस्था की ओर से उत्कर्ष तिवारी (शाखा प्रमुख), निहारिका (टीम लीडर), आर्यन श्रीवास्तव एवं अर्सलान उपस्थित रहे। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले बच्चों को 15 अगस्त को जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा, जबकि अन्य प्रतिभागियों को सांत्वना पुरस्कार दिया जाएगा। कार्यक्रम में एआरपी मनोज पांडेय, नोडल विनय मिश्रा, शंकुल सीमा सिंह, शिक्षक संघ की जिला अध्यक्ष श्रीमती अनुरागिनी सिंह तथा स्पेशल एजुकेटर पूनम सिंह, हेमलता चौधरी एवं अर्चना दुबे सहित अभिभावक एवं विभिन्न विकासखंडों के स्पेशल एजुकेटर मौजूद रहे।

जौनपुर इकाई की काव्यगोष्ठी सम्पन्न

जौनपुर। शहर समता विचार मंच जौनपुर इकाई की महिला काव्य गोष्ठी डॉ मधु पाठक के संयोजन मे अर्चना चौहान की अध्यक्षता में

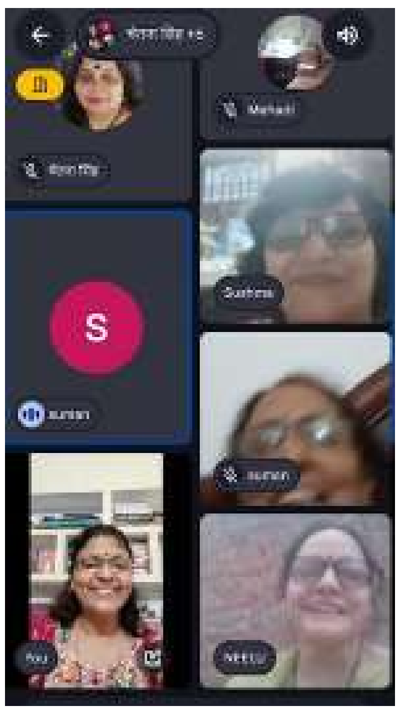

सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस काव्यगोष्ठी की मुख्य अतिथि डॉ सुमन सिंह एवं विशिष्ट अतिथि डॉ नीलू सिंह, डॉ सुषमा मिश्रा, चेतना सिंह रहीं। यह काव्य गोष्ठी गूगल मीट के द्वारा शाम 5.30बजे से 6.30 बजे तक चली जिसका शुभारंभ अध्यक्षता कर रही अर्चना चौहान द्वारा किया गया। सरस्वती वंदना की सुंदर प्रस्तुति मेंहदी (छात्रा) के द्वारा की गयी। काव्य गोष्ठी का कुशल संचालन डॉ मधु पाठक ने किया। इस काव्य गोष्ठी में डॉ सुषमा मिश्रा ने श्पिया तनी बचवा के खेलावा करा घुनघुना बजावा करा ना, डॉ नीलू सिंह ने आवा आजादी के अमृत महोत्सव मनाईं सखी देर ना लगाईं सखी ना, डॉ सुमन सिंह नेश्आई गयी बरखा बहार होश, चेतना सिंह ने श्क्या कहती हो नारी? डॉ मधु पाठक ने शतिरंगाश, रचना के पाठ से काव्यगोष्ठी को सफल बनाया ।धन्यवाद ज्ञापन डॉ मधु पाठक ने किया।

उत्तर मध्य रेलवे

सं.- CC-6/E-Auction/Commercial Publicity/2024 दिनांक: 13.08.2026

ई-नीलामी सूचना

वरिष्ठ मण्डल वाणिज्य प्रबंधक, उत्तर मध्य रेलवे, प्रयागराज रेलवे बोर्ड के पत्र दिनांक 13.06.2022 के अन्तर्गत प्रयागराज मण्डल के विभिन्न स्टेशनों पर बहुउद्देशीय स्टाल और खानपान स्टाल अनुबंध के लिए आईआरईपीएस के ई-नीलामी मॉड्यूल के माध्यम से बोलियां आमंत्रित करता है।
कैटरिंग।

S N	Details of publicity	E-Auction catalogue No.	E-Auction Start Date & Time
1	**05 वर्ष की अवधि के लिए विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर खानपान इकाइयाँ।** नैनी (02 स्थान), डनकौर (01 स्थान), भरथना (01 स्थान), खागा (01 स्थान), सिराथू (01 स्थान), दादरी (01 स्थान), हाथरस (02 स्थान), भरवारी (01 स्थान), सोनभद्र (01 स्थान), फफूंद (01 स्थान), सिराथू (01 स्थान)	PRYJ-CATG 26-22	25.08.2026 at 11.00 hrs.
2	**05 साल की अवधि के लिए विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर वॉटर वेंडिंग मशीनें।** अलीगढ़ सिटी (02 स्थान), भरथना (04 स्थान), फफूंद (04 स्थान), झिंझक (04 स्थान), मांडा रोड (02 स्थान), मेजा रोड (03 स्थान), एटा (04 स्थान), चौला (04 स्थान), अछल्दा (04 स्थान), डनकौर (04 स्थान), पनकीधाम (04 स्थान), बिंदकी रोड (04 स्थान), खुर्जा (05 स्थान), दादरी (06 स्थान)	MSS-WVM-26-15	25.08.2026 at 11.00 hrs.
3	**5 साल की अवधि के लिए विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर मल्टी-पर्पस यूनिट्स।** अलीगढ़ (01 स्थान), मानिकपुर (01 स्थान), फफूंद (02 स्थान), फतेहपुर (01 स्थान), प्रयागराज (01 स्थान)	PRYJ-MPS-26-11	25.08.2026 at 11.00 hrs.
4	**अलग-अलग रेलवे स्टेशनों पर 05 साल के लिए वॉटर वेंडिंग मशीनें।** फतेहपुर (07 स्थान), शिकोहाबाद (02 स्थान), सूबेदारगंज (02 स्थान), कानपुर अनवरगंज (04 स्थान), कुनार (05 स्थान), एटा (02 स्थान), भरवारी (04 स्थान), हमीरा (04 स्थान), मनौरी (04 स्थान), मैनपुरी (02 स्थान), खागा (04 स्थान), सिराथू (04 स्थान), हाथरस (04) स्थान), शंकरगढ़ (04 स्थान)	MSS-WVM-26-16	27.08.2026 at 11.00 hrs.
5	**5 साल की अवधि के लिए विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर खान-पान इकाइयाँ।** सिराथू (03 स्थान), सोनभद्र (01 स्थान), खुर्जा (02 स्थान), मैनपुरी (01 स्थान), खागा (04 स्थान), दादरी (01 स्थान), अलीगढ़ (01 स्थान), भरवारी (01 स्थान), शंकरगढ़ (01 स्थान)	PRYJ-CATG-26-23	27.08.2026 at 11.00hrs.
6	**5 साल की अवधि के लिए विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर खान-पान इकाइयाँ।** हरदुआगंज (01 स्थान), अछल्दा (01 स्थान), मानिकपुर (01 स्थान), फफूंद (01 स्थान)	PRYJ-CATG-26-22	31.08.2026 at 11.00 hrs.
7	**विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर 05 साल की अवधि के लिए मल्टी-पर्पस यूनिट्स।** प्रयागराज (01 स्थान)	PRYJ-MPS 26-11	31.08.2026 at 11.00 hrs.

इच्छुक बोलीदाता अधिक जानकारी के लिए, ई-नीलामी में भाग लेने के लिए आधिकारिक वेबसाइट www.ireps.gov.in पर जा सकते हैं। 1. बोलीदाताओं, जो ई-नीलामी मॉड्यूल में भाग लेना चाहते हैं, के पास वैध डिजिटल हस्ताक्षर प्रमाणपत्र (डीएससी) होना चाहिए और इसे भारत सरकार के प्रमाणन प्राधिकरण (सीसीए) के नियंत्रक के किसी भी प्रमाणित प्राधिकारी से प्राप्त किया जा सकता है, इसका विवरण www.cca.gov.in से प्राप्त किया जा सकता है। 2. बोलीदाताओं को आईआरईपीएस (वाणिज्यिक नीलामी मॉड्यूल) में खुद को ऑनलाइन पंजीकृत कराना होगा। 3. एकमुश्त पंजीकरण शुल्क रु. 10,000.00/- और लागू जीएसटी (गैर-वापसी योग्य) को किसी भी व्यावसायिक नीलामी में भाग लेने से पहले ऑनलाइन भुगतान करना होगा। 4. इस ई-नीलामी के संबंध में अधिक जानकारी, आवश्यकता और विभिन्न पहलुओं के लिए, इच्छुक बोलीदाताओं को http://www.ireps.gov.in/epsn/jsp/common/learning Center.jsp पर जाने की सलाह दी जाती है। 5. अग्रिम मनी डिपॉजिट (ईएमडी)। नीलामी के दौरान ऑनलाइन जमा की जाने वाली कुल सविदात्मक बोली मूल्य का 10%, सफल बोलीदाता की ईएमडी सुरक्षा जमा के रूप में रखी जाएगी। 6. रेल प्रशासन किसी भी समय (या कोई निर्णय लेने के लिए) इन अनुबंधों को समाप्त करने का पूर्ण और पूर्ण अधिकार सुरक्षित रखता है। 7. रेल प्रशासन इन गाड़ियों के जारी रहने/बंद होने या नई गाड़ी सेवाओं के शुरू होने के आधार पर किसी भी समय (या कोई निर्णय लेने के लिए) इन अनुबंधों को समाप्त करने का पूर्ण और पूर्ण अधिकार सुरक्षित रखता है। (यह मद एम एस आर/बी पी की पार्टी पर देने से सम्बंधित है) 8. सफल बोली लगाने वाले को समय-समय पर भारत सरकार द्वारा प्रभावी जीएसटी का भुगतान करना होगा। रेल प्रशासन इसके लिए उत्तरदाई नहीं होगा। 1872/26(K)

North central railways | www.ncr.indianrailways.gov.in | @CPRONCR

ईश्वर शरण में विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस एवं तिरंगा यात्रा का आयोजन

प्रयागराज। राष्ट्रीय सेवा योजना ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज द्वारा आज विभाजन विभीषिका त्रासदी स्मृति दिवस एवं तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के एनएसएस प्रभारी डॉअरविंद कुमार मिश्र ने विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस पर कार्यक्रम में उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय इतिहास में भारत का विभाजन एक ऐसा पल है, एक ऐसा मोड़ है जिसका निर्वचन बार–बार किया जाता रहेगा। एक शिक्षक के रूप में, एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में, एक भारतीय के रूप में हमारी क्या भूमिका हो सकती है? निश्चित रूप से हमारी भूमिका सिर्फ और सिर्फ यह हो सकती है कि हम उस विभाजन की स्थिति को ठीक– ठीक पहचाने और प्रत्येक विभाजनकारी शक्तियों, जो कि हमारे देश की एकता, अखंडता, अक्षुण्णता में बाधा उत्पन्न कर सकती हैं, उसके प्रति सचेत रहें, लोगों को जागरूक करें और इतने सशक्त हों कि इस तरह की चुनौतियों का सशक्त उत्तर दे

सके। आइए हम आज यह संकल्प ले कि हम अपने राष्ट्र की एकता अक्षुण्णता, अखंडता के प्रति हमेशा ही सहज रहेंगे, हमेशा ही समर्पित रहेंगे और प्रत्येक उस प्रयास का विरोध करेंगे जो हमारे राष्ट्र को कमजोर करता है। इसके पश्चात महाविद्यालय परिसर स्थित मुक्तांगन से तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। महाविद्यालय की वूमेन सेल की संयोजिका प्रोफेसर अमिता पाण्डेय द्वारा हरी झंडी दिखाकर तिरंगा यात्रा की शुरुआत की गई। यह तिरंगा यात्रा महाविद्यालय परिसर के आसपास के क्षेत्र से होते हुए वापस मुख्य द्वार पर संपन्न हुई। कार्यक्रम में कार्यक्रम अधिकारी डॉ शैलेश कुमार यादव, डॉ रुचि गुप्ता, डॉ आलोक मिश्रा एवं डॉ रेफाक अहमद ने सभी स्वयंसेवकों एवं स्वयंसेविकाओं का मार्गदर्शन करते हुए भारत माता की जय एवं वंदे मातरम के नारे का उद्घोष करते हुए भव्य रैली का आयोजन संपन्न किया। कार्यक्रम में प्रो. अनुजा सलूजा, डॉ रागिनी राय, डॉ अविनाश पांडे, डॉ रश्मि जैन, डॉ शिखा श्रीवास्तव, डॉ अंकित पाठक, डॉ विवेक कुमार यादव एवं डॉक्टर महेश प्रसाद राय द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित छात्र–छात्राओं का उत्साह वर्धन किया गया। उपरोक्त कार्यक्रम में प्रज्ञा दुबे,नम्रता, उज्जवल शुक्ल, युवराज, अंकित पटेल, कार्तिक, अरुण इत्यादि स्वयंसेवकों एवं स्वयंसेविकाओं की सराहनीय भूमिका रही।

सभी कुछ देती मिट्टी

गाँवों में बन खेत कराकर सबसे खेती।
भोजन,आश्रय,वस्त्र सभी कुछ मिट्टी देती।
बन हरियाली गीत हवाओं को हर्षा के।
भरती मधुर सुगंध प्रीत की वर्षा करके।
धरती है यह गाँव की सबका प्यारा ठाँव है।
पीकर सारी धूप को बनती केवल छाँव है।।

पाकड़ महुआ आम नीम अरु ताल–तलैया।
घर–आँगन के बीच जहाँ रहती गौरैया।
कल पुरजों से दूर बैल करते थे खेती।
रहते थे अति दूर जहाँ रहती थी रेती।
पावन माटी गाँव की जीवन का आधार है।
हरियाली जिसकी सदा कृषकों की मुस्कान है।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

सीएमपी डिग्री कॉलेज में निकली भव्य तिरंगा रैली, हजारों छात्र–छात्राओं ने लिया हिस्सा

प्रयागराज। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रभक्ति एवं राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से आज सीएमपी डिग्री कॉलेज में भव्य तिरंगा रैली का आयोजन किया गया। रैली का आयोजन महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अजय प्रकाश खरे के नेतृत्व में किया गया।

तिरंगा रैली में महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की सभी

इकाइयों तथा छब्ब महिला विंग ने उत्साहपूर्वक एवं सक्रिय सहभागिता की। हाथों में तिरंगा लेकर देशभक्ति के नारों के साथ बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं रैली में शामिल हुए। रैली में हजारों विद्यार्थियों की सहभागिता ने पूरे वातावरण को राष्ट्रभक्ति से ओत–प्रोत कर दिया। रैली महाविद्यालय परिसर से प्रारंभ होकर बैरहना चौराहे से होते हुए पुनः महाविद्यालय परिसर में पहुंची। इस दौरान विद्यार्थियों ने अनुशासन एवं उत्साह के साथ तिरंगे के प्रति सम्मान और राष्ट्र के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया। रैली के समापन अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. अजय प्रकाश खरे ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए राष्ट्रीय एकता, देशभक्ति और राष्ट्र के प्रति नागरिक कर्तव्यों के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थियों से देश की प्रगति एवं राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने का आह्वान किया।

तिरंगा रैली ने महाविद्यालय परिसर में स्वतंत्रता दिवस के उत्सव को और अधिक गरिमामय बना दिया तथा विद्यार्थियों में राष्ट्रीय गौरव एवं देशप्रेम की भावना को सशक्त किया।

गंगानाथ झा परिसर के डॉ. यशवन्त कुमार त्रिवेदी को मिला राष्ट्रीय “संस्कृत भूषण” सम्मान

प्रयागराज। केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, गंगानाथ झा परिसर, प्रयागराज के लिए अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि इस ऐतिहासिक शोध संस्थान की गौरवशाली परम्परा के उन्नायक इस बार डॉ. यशवन्त कुमार त्रिवेदी, सहायकाचार्य (दर्शन) के पद पर नियुक्त संस्कृत विद्वान बने। डॉ. त्रिवेदी वर्तमान में प्राक्शोध पाठ्यक्रम के संयोजक के दायित्व का भी निर्वहण कर रहे हैं। परिसर के प्राध्यापक डॉ. यशवन्त कुमार त्रिवेदी को संस्कृत भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान, संस्कृत के प्रचार–प्रसार तथा शोध की गुणवत्ता के लिए राष्ट्रीय स्तर पर 'संस्कृतभूषण' (युवा संस्कृत विद्वान) पुरस्कार से सम्मानित किए जाने हेतु चयनित किया गया है।

डॉ. त्रिवेदी का यह सम्मान उनकी व्यक्तिगत उपलब्धि मात्र ही नहीं है, अपितु यह गंगानाथ झा परिसर और केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के सम्पूर्ण परिवार के लिए गौरव का विषय है। गंगानाथ झा परिसर की अपनी एक समृद्ध शास्त्रीय एवं विद्वत् परम्परा रही है। ऐसे परिसर से जुड़े किसी युवा विद्वान का राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित होना इस परम्परा की निरन्तरता और उसकी जीवन्तता का स्पष्ट परिचायक है।

डॉ. यशवन्त कुमार त्रिवेदी ने अध्यापन के साथ–साथ शोध, शोध–पद्धति, भारतीय ज्ञान परम्परा और संस्कृत के व्यापक प्रसार के क्षेत्र में निरन्तर सक्रिय भूमिका निभाई है। विशेष रूप से युवा शोधार्थियों को शोध की वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित पद्धति से परिचित कराने तथा संस्कृत के अध्ययन को समकालीन आवश्यकताओं से जोड़ने की दिशा में उनका कार्य प्रशंसनीय रहा है।

परिसर परिवार की ओर से डॉ. यशवन्त कुमार त्रिवेदी को राष्ट्रीय स्तर पर 'संस्कृतभूषण' (युवा संस्कृत विद्वान) पुरस्कार के लिए चयनित किए जाने पर हर्ष एवं प्रसन्नता व्यक्त की गई। परिसर के निदेशक (प्रभारी) प्रो. रामकृष्ण पाण्डेय "परमहंस" ने डॉ. यशवन्त कुमार त्रिवेदी को सम्मानित किये जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उनके व्यक्तित्व को युवाशक्ति द्वारा संस्कृत जगत को अपने विशेष परिश्रम एवं समर्पण से लाभान्वित करते रहने हेतु प्रेरित करने वाला व्यक्तित्व बताया।

एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय में बी.एड. प्रथम वर्ष की छात्राओं का अभिनंदन

प्रयागराज। एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय, प्रयागराज के बी.एड. संकाय में बी.एड. प्रथम वर्ष में प्रवेश लेने वाली नवागत छात्राओं के स्वागत एवं अभिनंदन के लिए एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में डॉ. मधु टंडन,बी.एड. संकाय द्वारा नवागत छात्राओं का आत्मीय स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर

बी.एड. प्रथम वर्ष की छात्राओं को बी.एड. द्वितीय वर्ष की छात्राओं ने तिलक लगाकर एवं पुष्प भेंट कर अभिनंदन किया। इसी क्रम में बी.एड. द्वितीय वर्ष की छात्रा खुशी दुबे ने नवागत विद्यार्थियों को शपथ दिलाई, जिसमें विद्यार्थियों ने अनुशासन, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा एवं शिक्षक के रूप में अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. लालिमा सिंह ने नवागत छात्राओं तिलक लगाकर स्वागत किया। उन्होंने कहा कि शिक्षक बनने की यात्रा केवल पाठ्यक्रम पूरा करने तक सीमित नहीं है,बल्कि विद्यार्थियों में संवेदनशीलता, अनुशासन, नैतिक मूल्यों और नेतृत्व क्षमता का विकास करना भी इसका महत्वपूर्ण हिस्सा है। डॉ मधु टंडन बी.एड संकाय की कोऑर्डिनेटर डॉ.सौम्या कृष्णा ने छात्राओं को बी.एड.पाठ्यक्रम,शिक्षण की जिम्मेदारियों तथा एक आदर्श शिक्षक के गुणों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी। उन्होंने छात्राओं को अनुशासन, मेहनत, सकारात्मक सोच एवं निरंतर अध्ययन के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम डॉ.टी के गुप्ता एवं डॉ. प्रशांत कुमार के मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक संपन्न कराया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के सभी शिक्षक एवं प्रशिक्षक उपस्थित रहे और उन्होंने नवागत छात्राओं को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

उत्तर मध्य रेलवे

ई-प्रापण निविदा सूचना संख्या 26/38 दिनांक 14.08.2026

ई-प्रापण निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से प्रधान मुख्य सामग्री प्रबन्धक, उ.म.रे., प्रयागराज (आई.एस.ओ.9001: 2015 प्रमाणित इकाई)। निम्नलिखित मदों के लिए ई-प्रापण निविदायें आमंत्रित करते हैं।

निविदा संख्या : 30263103	मात्रा : 1082 नग	निविदा खुलने की तिथि : 07.09.2026
संक्षिप्त विवरण : इवल साइड ओपनको डोर क्लोजर (या ओवरहेड इवल एक्टिंग कन्सीलिड डोर क्लोजर डिवाइस)		
निविदा संख्या : 20263831	मात्रा : 69 सेट	निविदा खुलने की तिथि : 09.09.2026
संक्षिप्त विवरण : टी.ओ. एच. किट फॉर हाइ रीच पेंटोग्राफ		
निविदा संख्या : 20263472	मात्रा : 4355 नग	निविदा खुलने की तिथि : 09.09.2026
संक्षिप्त विवरण : स्फेरी ब्लॉक फॉर एक्सल गाइड		
निविदा संख्या : 60255017e	मात्रा : 01 सेट	निविदा खुलने की तिथि : 08.09.2026
संक्षिप्त विवरण : डिजाइन मैनुफैक्चर सप्लाइ इन्स्टालेशन टेस्टिंग एंड कमीशनिंग ऑफ इलैक्ट्रिक ओवरहेड ट्रैवलिंग क्रेन कैपसिटी 30/05/टन		
निविदा संख्या : 60265026	मात्रा : 1 सेट	निविदा खुलने की तिथि : 14.09.2026
संक्षिप्त विवरण : इलैक्ट्रिक ओवरहेड ट्रावेलिंग क्रेन		

नोट : उपरोक्त सभी ई-प्रापण निविदाओं का पूरा विवरण IREPS वेबसाइट https://www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है। निविदाओं में किसी भी बदलाव/शुद्धि-पत्र के लिए कृपया इस वेबसाइट को नियमित रूप से देखें। समाचार-पत्र में कोई अलग से शुद्धि-पत्र/परिवर्तन प्रकाशित नहीं किया जायेगा। 1877/26 (AS)

North central railways | www.ncr.indianrailways.gov.in | @CPRONCR

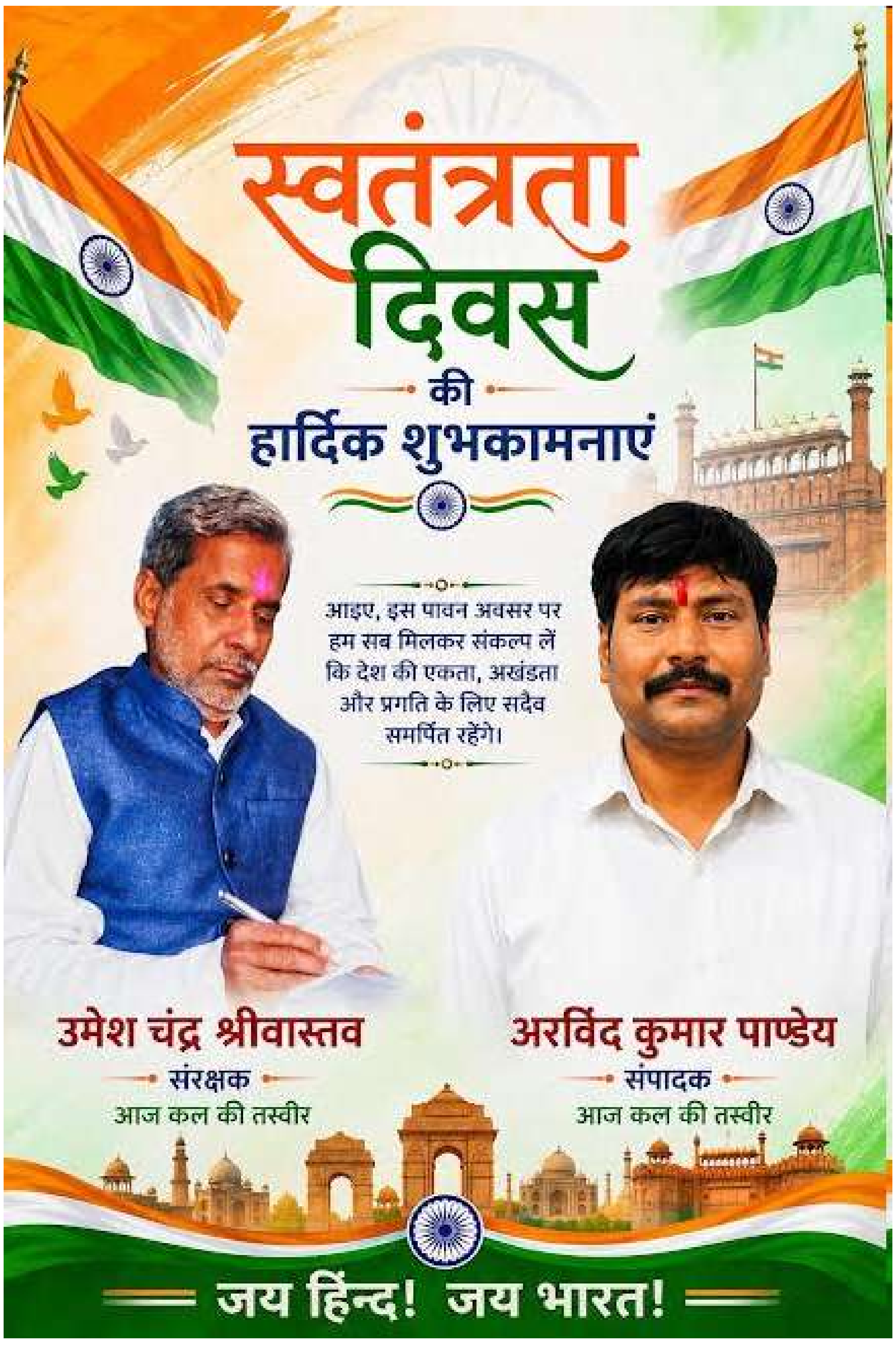

सम्पादकीय.......

नशा विरोधी अभिनव पहल

यह एक हकीकत है कि बच्चों को जितना अभिभावक और शिक्षक समझ सकते हैं, उतना दूसरा कोई नहीं। वे बच्चों के असामान्य व्यवहार की निगरानी करके उन्हें बुरी आदतों से बचा भी सकते हैं। शायद यही सोचकर पंजाब सरकार ने राज्य के 12 जिलों में 21,850 स्कूल टीचरों को छात्रों को नशीली दवाओं की लत से दूर रखने के लिये प्रशिक्षण देने का फैसला लिया है। ये शिक्षक प्रशिक्षण के बाद छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं और भावनात्मक परेशानी के शुरुआती लक्षणों की पहचान कर सकेंगे। निश्चय ही यह एक स्वागतयोग्य पहल है। यह इसलिए भी जरूरी है कि बच्चों के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से उन्हें नशे की गिरफ्त में आने से पहले ही बचाया जा सकेगा। यह बेहतर स्थिति है कि नशे की लत का शिकार होने के बाद उपचार के बजाय उन्हें पहले ही नशे से दूर रहने को प्रेरित किया जाए। दरअसल, पंजाब सरकार के 'युद्ध नशियां विरुद्ध' अभियान के तरह शुरू किया गया यह कार्यक्रम प्रिंसिपल और हेडमास्टरों की पिछली ट्रेनिंग तथा अमृतसर में 2,800 से ज्यादा टीचरों को शामिल करने वाले एक पायलट प्रोजेक्ट का हिस्सा है। दरअसल,इस अभियान की सबसे बड़ी खूबी है कि यह नशा–विरोधी अभियान का फोकस नशे की लत लगने के बाद प्रतिक्रिया देने से हटाकर, उसे रोकने की ओर ले जाता है। निस्संदेह, शिक्षक एक अभिभावक जैसी भूमिका में होते हैं, जो बच्चे के व्यवहार, स्कूल में उपस्थिति, पढ़ाई–लिखाई के प्रदर्शन, दोस्ती या भावनात्मक स्थिति में बदलाव को बेहतर ढंग से महसूस कर सकते हैं। दरअसल, शिक्षक कक्षा में छात्र की चुप्पी और क्लास में होते हुए भी वहां न होने जैसे संवेदनशील बदलावों को भांप सकते हैं। लेकिन बच्चों की संवेदनशीलता को देखते हुए शिक्षकों को अनाड़ी जांचकर्ता या काउंसलर बनने से बचना होगा। निर्विवाद रूप से किसी बच्चे का क्लास में चुप–चुप रहना, नंबर कम आना या व्यवहार में बदलाव आना हमेशा नशे से जुड़े कारण से नहीं हो सकता। उससे जुड़े अन्य कारकों पर भी विचार किया जाना जरूरी होता है। दरअसल, इस जटिल समस्या के समाधान के लिये शिक्षकों को संवेदनशील व्यवहार के लिये प्रेरित किया जाना चाहिए। शिक्षकों को बिना किसी पूर्वाग्रह के देखने, सुनने, बातचीत करने तथा छात्रों को योग्य पेशेवरों के पास भेजने के लिये प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। वास्तव में इस संवेदनशील समस्या का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है कि किसी बच्चे में नशे की ओर उन्मुख होने और उसकी जल्दी पहचान होने पर उसे जल्दी मदद मिल सके। पर ऐसा न हो कि शिक्षक उत्साह में उसकी पहचान उजागर कर दें और उसकी जल्दी बदनामी हो जाए। ऐसा बच्चा कुंठा व हताशा में गलत राह में भटक सकता है। ऐसे में इस अभियान का मानसिक स्वास्थ्य वाला हिस्सा विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है। यह एक हकीकत है कि युवाओं में नशीले पदार्थों के गलत इस्तेमाल की समस्या को सिर्फ चेतावनी तथा नैतिक उपदेश देकर दूर नहीं किया जा सकता है। वास्तव में भावनात्मक परेशानी, पारिवारिक समस्याएं, दोस्तों का दबाव, अकेलापन और पढ़ाई का तनाव आदि सभी चीजें बच्चों को जोखिम में डाल सकती हैं। इसलिए स्कूलों में जागरूकता कार्यक्रम के साथ ही काउंसलिंग और रेफरल की प्रभावी व्यवस्था होनी चाहिए। वहीं दूसरी ओर सरकार को भी सिर्फ प्रशिक्षित किए गए शिक्षकों की संख्या के आधार पर सफलता को नहीं मापना चाहिए। दरअसल, उसे यह भी देखना चाहिए कि कितने कमजोर या जोखिम वाले छात्रों की पहचान की गई है। साथ ही उन्हें कहां भेजा गया है। क्या उनकी काउंसलिंग की गई है? क्या बाद में उनका फॉलो–अप किया गया है? यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि शिक्षकों पर पढ़ाई के अलावा कई तरह के सरकारी कार्यक्रमों के लिये समय देने का दबाव होता है। ऐसे में सावधानी रखनी बेहद जरूरी है कि तमाम प्रशासनिक जिम्मेदारियों के बीच ड्रग्स के खिलाफ प्रशिक्षण सिर्फ खानापूर्ति के लिये कागजी कार्रवाई बनकर न रह जाए। सबसे महत्वपूर्ण यह कि इस कार्यक्रम को क्लासरूम से आगे लेकर जाना चाहिए। जिसमें माता–पिता, काउंसलर, हेल्थ प्रोफेशनल और सामाजिक समूहों को एकजुट होकर जोखिम वाले बच्चों के लिये एक सपोर्ट नेटवर्क तैयार करना चाहिए।

ओ भूले बिसरे नायक, तुम्हें शत शत नमन

कुछ ऐसे नाम किताबों में बहुत कम आए

उन के हिस्से की दुआओं में भी ख़म आए

दशकों से हम सब अपने दादा –नाना से आज़ादी के मतवालों की कहानियां सुनते आ रहे हैं। वो कहानियां जो बताती हैं कि कितने संघर्ष, कितनी यातनाओं और कितनी क़ुर्बानियों के बाद हमें अपने ही देश में इंसानों की तरह रहने –घूमने, काम करने, पढ़ने –लिखने और बोलने की स्वतंत्रता मिली है। देखा तो नहीं है पर जितना सुना गया है, वो हमारे शूरवीरों, शहीदों और स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के सामने हमें बार –बार नत मस्तक कर देता है।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास केवल गांधी, नेहरू, सुभाष चंद्र बोस या भगत सिंह तक सीमित नहीं है। हजारों ऐसे स्त्री–पुरुष थे, जिन्होंने इस आंदोलन में जेल की यातनाएं सही, निर्वासन झेला, आर्थिक कठिनाइयाँ और अपने जीवन तक का बलिदान कर दिया लेकिन आज उनकी चर्चा अपेक्षाकृत कम होती है। इन नायकों को आज याद करना क्यों जरूरी है?

इन लोगों को याद करना केवल इतिहास की जानकारी बढ़ाना नहीं है। इनके संघर्ष से हमें यह समझने में मदद मिलती है कि स्वतंत्रता किसी एक नेता या एक आंदोलन की देन नहीं थी। यहां किसी ने कलम उठाई, किसी ने तिरंगा, किसी ने जंगलों में संघर्ष किया, किसी ने लोगों को इकट्ठा किया, जनजागरण का काम किया और किसी ने ऐसे आज़ादी के दीवानों को बचाते हुए अपना जीवन दे दिया।

आज के संदर्भ में उन कम लोकप्रिय, कम चर्चित या कुछ कम सुने नायकों को याद करना इसलिए भी ज़रूरी है कि देश के भविष्य हमारे युवा और हम स्वयं यह हमेशा याद रखें कि आज़ादी केवल प्राप्त करने की चीज नहीं है।

उसे लोकतांत्रिक मूल्यों, न्याय, समानता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सामाजिक सद्भाव के माध्यम से लगातार सार्थक बनाए रखना होगा और ये हम सबकी सांझी ज़िम्मेदारी है।

इतिहास में किसी नायक की स्मृति कैसे बनती है। जिन सेनानियों का नाम हम अधिकतर सुनते आए हैं। उनमें चंद्रशेखर आज़ाद, महात्मा गांधी और सुभाष चन्द्र बोस आदि प्रमुख नाम हैं। इनकी लोकप्रियता के पीछे कई ऐतिहासिक कारण थे।

उनका संघर्ष अखिल भारतीय स्तर पर दिखा...

गांधी का असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन से देश के बहुत बड़े हिस्से जुड़े। सुभाष चंद्र बोस और आज़ाद भी राष्ट्रीय स्वतंत्रता संघर्ष की बड़ी धारा के प्रमुख प्रतीक बन गए।

इसके विपरीत, कई सेनानियों का संघर्ष किसी विशेष क्षेत्र, समुदाय या स्थानीय आंदोलन तक ही सीमित रहा। उनका योगदान महत्वपूर्ण था, लेकिन उसकी पहुँच पूरे देश में उतनी नहीं बन पाई। इसलिए भी उनकी चर्चा कम हुई और होते–होते कुछ अनसुनी तक भी पहुंच गई।

इतिहास में "प्रतीक" बन जाना

कुछ व्यक्तित्व धीरे–धीरे पूरे आंदोलन के प्रतीक बन गए।

गांधी – अहिंसक जनआंदोलन,

सुभाष चंद्र बोस –सशस्त्र संघर्ष और आज़ाद हिंद फ़ौज

चंद्रशेखर आज़ाद – क्रांतिकारी साहस और बलिदान याने जब किसी व्यक्ति का नाम किसी बड़े विचार या आंदोलन का प्रतीक बन जाता है, तो उसकी स्मृति पीढ़ी–दर–पीढ़ी अधिक आसानी से पहुँचती है।

मीडिया और संचार की भूमिका

यह बहुत महत्वपूर्ण कारण है या कहिए कि सबसे महत्वपूर्ण कारण रहा है। स्वतंत्रता आंदोलन के समय भी अख़बार, पत्र–पत्रिकाएँ, भाषण और साहित्य किसी नेता की लोकप्रियता बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभाते थे। जिन नेताओं के विचार और गतिविधियाँ व्यापक रूप से प्रकाशित हुईं, वे अधिक लोगों तक पहुँचे। उनके फालोवर बढ़े, जनमानस के बीच उन्होंने एक छबि बनाई और उसी छबि, उसी विचारधारा ने उन्हें देश का चेहरा बना दिया। आज हम इसे सोशल मीडिया के संदर्भ में आसानी से समझ सकते हैंकिजिसकी कहानी ज़्यादा लोगों तक पहुँचती है, उसकी सार्वजनिक स्मृति भी अधिक मज़बूत होती है।

स्वतंत्रता के बाद की राजनीति और पाठ्यक्रम

आज़ादी के बाद इतिहास को व्यवस्थित रूप से लिखने और पढ़ाने की प्रक्रिया शुरु हुई। स्वाभाविक रूप से कुछ बड़े राष्ट्रीय आंदोलनों और प्रमुख नेताओं को अधिक स्थान मिला। इसका यह अर्थ नहीं कि बाकी सेनानी कम महत्वपूर्ण थे। हुआ ये कि कई बार क्षेत्रीय इतिहास, आदिवासी आंदोलनों, महिलाओं के योगदान और स्थानीय प्रतिरोधों को राष्ट्रीय इतिहास की तुलना में उतनी जगह नहीं मिली।

कुछ सेनानियों का दस्तावेज़ीकरण कम हुआ

यह भी एक बड़ा कारण है, क्योंकि

कई स्थानीय सेनानियों के संघर्ष का रिकॉर्ड अख़बारों, सरकारी दस्तावेज़ों या पुस्तकों में बहुत कम बचा। कुछ आंदोलन मौखिक परंपराओं में जीवित रहे। परिणाम यह हुआ कि अगली पीढ़ियों तक उनकी कहानी उतनी पुख़्तगी के साथ नहीं पहुँच सकी और जैसे कहानियां सुनाने के क्रम में हम से अक्सर कुछ प्रसंग इधर –उधर जाते हैं, हमारे ये सेनानी भी इसी भूल–चूक का हिस्सा हो गये।

लोकप्रियता और योगदान एक ही चीज नहीं हैं

फिर यह भी समझना होगा कि लोकप्रियता और उस व्यक्ति विशेष का योगदान भी कई बार एक नहीं होता। सीधे शब्दों में कहें तो किसी व्यक्ति की लोकप्रियता उसके योगदान का सटीक पैमाना नहीं होती। उदाहरण के लिए अगर कोई नेता बहुत अच्छा बोलने या दिखने की वजह से या फिर अपनी वाक शैली की वजह से लोकप्रिय है तो उस नेता की लोकप्रियता को केवल प्रचार का परिणाम कहना भी ऐतिहासिक रूप से उचित नहीं होगा। वास्तव में हमें यह जानने – समझने की ज़रूरत होगी कि

स्वतंत्रता आंदोलन को अगर हम केवल कुछ महान नेताओं की कहानी बना देते हैं तो हम उस आंदोलन की असली व्यापकता खो देते हैं।

असल में स्वतंत्रता की लड़ाई में

एक प्रसिद्ध नेता से लेकर क्रांतिकारी, पत्रकार, किसान, मज़दूर, विद्यार्थी, विदुषी महिलाओं, आदिवासी समुदाय और स्थानीय कार्यकर्ताओं तक सभी की भूमिका थी। इसलिए आज भूले–बिसरे नायकों को याद करना किसी प्रसिद्ध नेता की महत्ता कम करना नहीं है। बल्कि यह भारत के स्वतंत्रता संग्राम की पूरी तस्वीर को सामने लाना है। वर्ना पूछा तो यह भी जाएगा कि क्या इतिहास केवल उन लोगों का होता है जिनके नाम सबसे ज्यादा याद रखे गए, या उन लाखों लोगों का भी, जिनके योगदान ने आज़ादी की नींव मज़बूत की लेकिन जिनके नाम समय की धूल में दब गए?

यह सवाल आज के युवाओं और लोकतंत्र के संदर्भ में भी बहुत प्रासंगिक है।

यहाँ कुछ ऐसे भूले–बिसरे या कम चर्चित स्वतंत्रता सेनानियों के बारे में संक्षिप्त में जानें ...

गणेश शंकर विद्यार्थी

एक पत्रकार, समाजसेवी और स्वतंत्रता सेनानी। उन्होंने प्रताप अख़बार के माध्यम से ब्रिटिश शासन की नीतियों के विरुद्ध जनमत तैयार किया। उन्होंने ब्रिटिश शासन के अत्याचारों, किसानों और मजदूरों के शोषण के ख़िलाफ़ निडरता से आवाज़ उठाई। आपने पत्र श्प्रतापश् के जरिए उन्होंने शोषित जनता, किसानों और मिल मज़दूरों के अधिकारों की पुरज़ोर वकालत की। उन्हें किसान श्प्रताप बाबाश् कहकर पुकारते थे। उन्होंने होम रूल आंदोलन, असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया, जिसके लिए उन्हें कई बार कठोर कारावास की सजा भुगतनी पड़ी। मार्च 1931 में कानपुर में भयंकर सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे। उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना दंगों के बीच जाकर फंसे हुए सैकड़ों बेकसूर लोगों की जान बचाई। 25 मार्च 1931 को इसी मानवीय कार्य के दौरान हिंसक भीड़ ने उनकी निर्मम हत्या कर दी। उन्होंने देश और भाईचारे के लिए अपने प्राणों का बलिदान दे दिया। गणेश शंकर विद्यार्थी जी ने राष्ट्रहित को सर्वोपरि मानते हुए अपनी कलम को हथियार बनाया और ब्रिटिश हुकूमत की नींव हिला दी थी। वे केवल पत्रकार नहीं थे, बल्कि सामाजिक सद्भाव के प्रबल समर्थक थे। 25 मार्च 1931 को कानपुर में सांप्रदायिक दंगों के दौरान हिंदू–मुस्लिमों की जान बचाते हुए वे हिंसक भीड़ का शिकार हो गए थे।

मातंगिनी हाजरा

बंगाल की मातंगिनी हाजरा को प्यार से "गांधी बुढ़ी" कहा जाता था। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान वे तिरंगा लेकर आगे बढ़ रही थीं। गोली लगने के बावजूद वे राष्ट्रीय ध्वज को थामे रहीं। वे इस बात का उदाहरण हैं कि स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं और ग्रामीण समाज की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण रही। उन्होंने गांधीजी के विचारों और अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए आजीवन देश की सेवा की।

उषा मेहता

उषा मेहता, 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के समय 22 वर्षीय क़ानून की छात्रा थीं। वो गांधी की विचारधारा से प्रभावित हुईं और उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड़कर आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। सूचना के प्रचार–प्रसार की प्रभावकारिता को पहचानते हुए उन्होंने संचार के एक गुप्त साधन के रूप में कॉन्ग्रेस रेडियो की धारणा की कल्पना की।

गुप्त कांग्रेस रेडियो चलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश सरकार द्वारा सेंसरशिप के बावजूद इस रेडियो के माध्यम से आंदोलनकारियों तक समाचार और संदेश पहुँचाए जाते थे। उषा मेहता की कहानी, उनका योगदान आज के मीडिया और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है।

पीर अली खान

अनसुने नायकों में पीर अली खान का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। वे पटना में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़े थे। गिरफ्तार किए जाने के बाद उन्हें फ़ांसी दे दी गई थी।

पीर अली खान का जीवन बताता है कि 1857 का विद्रोह केवल कुछ प्रसिद्ध सैनिक नेताओं तक सीमित नहीं था। पीर अली खान का ख़ौफ़ ऐसा था कि उनके अंदर से निकलने वाली आज़ादी की चिंगारी अंग्रेज़ों को डराने के लिए काफी थी।

अल्लूरी सीताराम राजू

आंध्र प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में इन्होंने ब्रिटिश शासन की नीतियों के ख़िलाफ़ रम्पा विद्रोह का नेतृत्व किया। उनका संघर्ष मुख्यतः आदिवासी समुदायों के अधिकारों और औपनिवेशिक दमन के विरुद्ध था। दक्षिण भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इन्होंने लोगों को जागरूक कर संगठित आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अल्लूरी सीताराम राजू एक महान भारतीय क्रांतिकारी थे। वे मुख्य रूप से अंग्रेज़ों के दमनकारी वन क़ानूनों के ख़िलाफ़ आदिवासियों को एकजुट करके गुरिल्ला युद्ध चलाने के लिए प्रसिद्ध थे। स्थानीय लोगों के बीच वो जंगल के नायक के रूप में प्रसिद्ध रहे।

कनकलता बरुआ

असम की युवा स्वतंत्रता सेनानी कनकलता बरुआ भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय थीं। कनकलता बरुआ भारत की वो स्वतन्त्रता सेनानी थीं, जिनको अंग्रेज़ों ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन के समय गोली मार दी। उन्हें श्बीरबालाश् भी कहते हैं। वे असम की निवासी थीं। उन्हें पूर्वोत्तर भारत की श्लक्ष्मीबाईश् भी कहा जाता हैं। 1942 में वे तिरंगा लेकर एक जुलूस का नेतृत्व कर रही थीं। वे पूर्वोत्तर भारत में युवाओं की स्वतंत्रता संघर्ष में भागीदारी का प्रतीक हैं। तिरंगा हमारी आन बान शान का प्रतीक है। ऐसी क़ुर्बानियां क्या कभी भुलाई जा सकेंगी?

तिरुप्पुर कुमारन

तमिलनाडु के युवा स्वतंत्रता सेनानी तिरुप्पुर कुमारन ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आंदोलनों में हिस्सा लिया। वे राष्ट्रीय ध्वज को लेकर निकले जुलूस के दौरान पुलिस की कार्रवाई में घायल हुए और बाद में उनकी मृत्यु हो गई। उन्हें तमिलनाडु में "कोडी काथा कुमारन" याने "झंडे की रक्षा करने वाले कुमारन" के नाम से याद किया जाता है।

रानी गैदिनल्यू

पूर्वोत्तर भारत की रानी गैदिनल्यू ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आंदोलन किया। बहुत कम उम्र में वे इस संघर्ष से जुड़ीं और उन्हें लंबे समय तक जेल में रहना पड़ा। उनका योगदान यह याद दिलाता है कि स्वतंत्रता आंदोलन की कहानी पूर्वोत्तर भारत के जनजातीय समाजों को शामिल किए बिना अधूरी है। समाज सेवा के क्षेत्र में उनके कार्यों के लिए भारत सरकार ने उन्हें 1982 में पद्म भूषण से सम्मानित किया।

संगीता 'सुमन'

प्रयागराज उप्र

15 अगस्तः क्या स्वतंत्रता केवल एक उत्सव है, या अग्नि की अनवरत राष्ट्र–परीक्षा?

जब–जब 15 अगस्त का सूर्य भारत के क्षितिज पर उदित होता है, तब–तब लाल किले की प्राचीर से बहने वाली हवाएं हमसे एक ही यक्ष–प्रश्न पूछती हैंक्या हम केवल अतीत की गौरवगाथाओं के सहारे जी रहे हैं, या वर्तमान के ज्वलंत प्रश्नों से आंखें मिलाने का पराक्रम भी रखते हैं? आज जब पूरा देश स्वाधीनता का पर्व मना रहा है, तब हमें यह सत्य सहर्ष स्वीकारना होगा कि स्वतंत्रता केवल कालचक्र की एक ऐतिहासिक तिथि नहीं, बल्कि राष्ट्र–पुरुष की वह जीवंत चेतना है जिसे हर युग में अपने तप, त्याग और स्वेद से सींचना पड़ता है। जिस मिट्टी के एक–एक कण के लिए हमारे अनगिनत हुतात्माओं ने हंसते–हंसते अपनी गर्दनें कटवा दीं, क्या आज उस माटी के प्रति हमारे हृदय में वह अखंड सम्मान शेष है? यदि नहीं, तो आइए इस पावन अवसर पर उस पावन माटी को उठाकर अपने माथे पर उसका तिलक लगाएं और स्वयं से पूछें कि क्या हम शहीदों के सपनों का भारत बना पा रहे हैं?

श्मैंने सदैव माना है कि राष्ट्र केवल सीमाओं का मानचित्र नहीं होता। राष्ट्र बनता है उसकी हुंकार से, उसकी जन–चेतना से और अपने देश की धूल को चंदन समझने वाले नागरिकों के अटूट समर्पण से। इसी ज्वाला को प्रज्वलित करते हुए राष्ट्रकवि रामधारी सिंह श्दिनकरश ने कभी देश के स्वाभिमान को जगाते हुए ललकारा था–

सिंहासन खाली करो कि जनता आती है!

आरती लिए तू किसे ढूंढता है मूरख, मंदिरों, राजप्रासादों में, तहखानों में?

देवता कहीं सड़कों पर गिट्टी तोड़ रहे, देवता मिलेंगे खेतों में, खलिहानों में।श

श्आज का वर्तमान परिवेश हमसे यही उत्तर मांग रहा है कि क्या हम उस श्देवताश यानी देश के अंतिम जन के जीवन में स्वतंत्रता का वास्तविक प्रकाश पहुंचा पाए हैं? आज भारत तकनीक, विज्ञान, अंतरिक्ष अनुसंधान और आर्थिक सामर्थ्य के क्षेत्र में विश्व पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ रहा है। हमारी मिसाइलें गगन का सीना चीर रही हैं और हमारी युवा प्रतिभाएं पूरी दुनिया को संचालित कर रही हैं। यह निस्संदेह हमारे वैज्ञानिकों, श्रमिकों और राष्ट्र के अनवरत पुरुषार्थ का सजीव प्रमाण है।

घ्परंतु, यदि हम सिक्के के दूसरे पहलू को देखें, तो दृश्य अत्यंत गंभीर और मंथन करने योग्य है। क्या आज के युवा के हृदय में अपने देश के इतिहास, संस्कृति और बलिदानियों के प्रति वही ज्वाला धधक रही है, जो 1947 से पूर्व स्वतंत्रता सेनानियों के सीने में जलती थी? क्या सामाजिक विषमता, जातिगत संकीर्णता, क्षेत्रीयता और वैचारिक दासता का जो विष हमारे सामाजिक ताने–बाने में घोला जा रहा है, उससे हम पूर्णतः मुक्त हो पाए हैं? जब–जब समाज में राष्ट्रीय हित के स्थान पर व्यक्तिगत स्वार्थ सर्वोपरि होने लगता है, जब–जब भ्रष्टाचार आम नागरिक के स्वाभिमान को कुचलता है, तब–तब हमारी स्वाधीनता के मस्तक पर एक प्रश्नचिह्न लग जाता है।

श्मेरी दृष्टि में आज सबसे बड़ी आवश्यकता राष्ट्रीय चेतना को हर भारतीय के भीतर कूट–कूट कर भरने की है। राष्ट्रप्रेम कोई ऐसा वस्त्र नहीं जिसे हम वर्ष में केवल दो बारक्15 अगस्त और 26 जनवरी कोक् पहनकर प्रदर्शन करें। राष्ट्रप्रेम तो हमारी हर सांस में, हमारे हर विचार में और हमारे प्रतिदिन के आचरण में प्रवाहित होना चाहिए। जब तक देश का प्रत्येक किसान, मजदूर, शिक्षक, अधिकारी और विद्यार्थी अपने कर्तव्य को राष्ट्र–यज्ञ की आहुति नहीं मानेगा, तब तक यह स्वाधीनता अधूरी ही रहेगी।

श्इतिहास गवाह है कि जब–जब राष्ट्र का नागरिक अपने कर्तव्यों से विमुख होकर तटस्थ बैठ जाता है, तब–तब पतन की राहें खुल जाती हैं। मेरी यह स्पष्ट धारणा है कि वर्तमान युग में चुप्पी साध लेना भी अपराध हैरू

समर शेष है, नहीं पाप का भागी केवल व्याध,

जो तटस्थ हैं, समय लिखेगा उनके भी अपराध।श

घ्तटस्थता आज के दौर का सबसे बड़ा महापाप है। जब हम अपने आसपास अन्याय, भ्रष्टाचार, सामाजिक वैमनस्य या राष्ट्र–विरोधी प्रवृत्तियों को देखकर मौन धारण कर लेते हैं, तो हम उन अमर शहीदों के बलिदान का अपमान कर रहे होते हैं जिन्होंने फांसी के फंदे को चूमते हुए यह विश्वास व्यक्त किया था कि आने वाली पीढ़ियां इस देश की आन–बान–शान की रक्षा करेंगी।

आज की स्वतंत्रता की लड़ाई सीमाओं पर बंदूकों से लड़े जाने वाले युद्ध से कहीं अधिक जटिल और कठिन है। आज की असली लड़ाई अपने भीतर की कायरता, अकर्मण्यता, अशिक्षा, नागरिक कर्तव्यों के प्रति उपेक्षा और स्वार्थपरता के विरुद्ध है। 1947 में मिली राजनीतिक स्वतंत्रता केवल पहला सोपान थी। सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक स्वाधीनता का महासंग्राम आज भी जारी है, और इस संग्राम में हर भारतीय को अपना योगदान देना होगा।

घ्आज जब पूरा विश्व नैतिक संकटों, आर्थिक अनिश्चितताओं और युद्ध की विभीषिकाओं से जूझ रहा है, तब भारत से पूरी दुनिया एक दिशा–दर्शक के रूप में मार्ग आलोकित करने की आशा रखती है। परंतु भारत दुनिया का नेतृत्व तब तक नहीं कर सकता, जब तक हमारी आंतरिक नींव वज्र जैसी सुदृढ़ न हो। और यह नींव केवल और केवल प्रखर राष्ट्रीय चेतना से ही निर्मित हो सकती है।

घ्यदि हमें अपने राष्ट्र को वास्तव में सामर्थ्यवान और जगद्गुरु बनाना है, तो केवल नारों और उत्सवों से काम नहीं चलेगा। हमें हर हृदय में राष्ट्र–भक्ति का वह दीपक जलाना होगा जो कभी न बुझे।

हटो व्योम के मेघ! पंथ रोको न हमारा,

हम नवीन युग के अग्रदूत, हम नूतन धारा।श

आइए, इस 15 अगस्त को हम केवल पुरानी विजय गाथाएं गाकर संतुष्ट न हों। आइए, इस पावन धरा की धूल को अपने माथे पर चंदन की भांति लगाएं और संकल्प लें कि हम अपने आचरण, विचार और कर्म से एक ऐसे भारत का निर्माण करेंगे जहां न्याय अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे; जहां सत्य बोलने का साहस हर नागरिक का आभूषण हो; और जहां राष्ट्रहित से बड़ा कोई अन्य धर्म न हो। जब देश का प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्य–पथ पर आरूढ़ होकर शीश उठाकर जिएगा, तभी उन अमर बलिदानियों की आत्माओं को सच्ची श्रद्धांजलि प्राप्त होगी। समर अभी शेष है, और इस समर में हम सभी को अपना सर्वस्व अर्पण करने हेतु तत्पर रहना होगा!

डॉ संगीता मनीष बनाफर प्रदेश अध्यक्ष विश्व हिंदी परिषद,जिलाध्यक्ष शहर समता प्रयागराज मंच,छत्तीसगढ़ बिलासपुर

देशभक्ति के जज्बे से भर देंगे बॉलीवुड के ये गाने, सुनते ही जाग उठेगा देशप्रेम

> गाने की भावुक धुन और शानदार बोल इसे खास बनाते हैं। फिल्म 'राजी' का 'ऐ वतन' देश के प्रति प्यार और समर्पण की भावना को बेहद खूबसूरती से पेश करता है। यह गाना सुनकर दिल में देश के लिए गर्व की भावना पैदा होती है।

देशभक्ति से जुड़े ये गाने सुनते ही दिल में देश के लिए प्यार और गर्व की भावना जागने लगती है। तो इस स्वतंत्रता दिवस पर आप भी अपनी प्लेलिस्ट में इन गानों को जरूर शामिल कर सकते हैं। 'ऐ मेरे वतन के लोगों' भारत के सबसे यादगार देशभक्ति गीतों में से एक है। लता मंगेशकर की आवाज में यह गाना आज भी लोगों को भावुक कर देता है। इसे सुनते ही देश के वीर जवानों की याद आती है। फिल्म 'हकीकत' का यह गाना देश के सैनिकों के बलिदान को याद करता है। गाने के बोल दिल को छू जाते हैं और देश के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा पैदा करते हैं। फिल्म 'बॉर्डर' का 'संदेशे आते हैं' आज भी देशभक्ति गानों की लिस्ट में खास जगह रखता है। गाने में सैनिकों और उनके परिवारों के बीच की भावनाओं को बहुत खूबसूरती से दिखाया गया है। 'केसरी' का गाना 'तेरी मिट्टी' शहीदों के बलिदान और देश के प्रति उनके प्यार को दर्शाता है। गाने की भावुक धुन और शानदार बोल इसे खास बनाते हैं। फिल्म 'राजी' का 'ऐ वतन' देश के प्रति प्यार और समर्पण की भावना को बेहद खूबसूरती से पेश करता है। यह गाना सुनकर दिल में देश के लिए गर्व की भावना पैदा होती है। फिल्म 'संजू' का 'कर हर मैदान फतेह' सीधे तौर पर देशभक्ति गीत नहीं है, लेकिन इसमें जीत और मुश्किलों से लड़ने का जो जज्बा है, वह स्वतंत्रता दिवस की भावना से जुड़ जाता है। फिल्म 'रंग दे बसंती' का टाइटल ट्रैक युवाओं के अंदर जोश और देश के लिए कुछ करने की भावना पैदा करता है। आज भी यह गाना युवाओं के बीच काफी पसंद किया जाता है। 'स्वदेश' का 'ये जो देश है तेरा' अपने देश और मिट्टी से जुड़ाव की खूबसूरत कहानी कहता है। यह गाना उन लोगों के लिए खास है, जिन्हें अपने देश और अपनी जड़ों से गहरा लगाव है। ए.आर. रहमान का 'मां तुझे सलाम' देशभक्ति संगीत के सबसे लोकप्रिय गानों में से एक है। इसकी आवाज और बोल सुनते ही देश के लिए गर्व की भावना और मजबूत हो जाती है।

समय रैना समेत पांच लोगों को मिली बड़ी राहत, सुप्रीम कोर्ट ने एफआईआर रद्द करने के साथ की उनके काम की तारीफ

कॉमेडियन और यूट्यूबर समय रैना समेत पांच आरोपियों को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। अदालत ने इन लोगों के खिलाफ एफआईआर रद्द कर दी है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, सुप्रीम कोर्ट ने 14 अगस्त को यह आदेश पारित किया। यह मामला इंडियाज गॉट लैटेंट्स शो में दिव्यांग लोगों के बारे में असंवेदनशील टिप्पणी करने से जुड़ा है। समय रैना के अलावा, इस राहत में विपुल गोयल, बलराज परमजीत सिंह घई, सोनाली ठक्कर (उर्फ सोनाली आदित्य देसाई) और निशांत जगदीश तंवर भी शामिल हैं। बेंच के मुताबिक अगर उन्होंने सकारात्मक दिशा में काम करना शुरू किया है, तो सकारात्मक परिणाम भी मिलेंगे। कोर्ट ने कहा कि पांचों कॉमेडियन के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही रद्द की जा रही है और इससे जुड़ी अन्य कार्यवाही भी खत्म कर दी जाएगी। हालांकि, ऑनलाइन कंटेंट पर नियंत्रण से जुड़ा बड़ा मुद्दा अभी भी खुला हैय उम्मीद है कि उचित निर्देश तैयार करने से पहले कोर्ट दिव्यांग लोगों के सुझावों पर विचार करेगा। कोर्ट ने कहा कि पांचों कॉमेडियन के खिलाफ आपराधिक कार्यवाही रद्द की जा रही है और इससे जुड़ी अन्य कार्यवाही भी खत्म कर दी जाएगी। हालांकि, ऑनलाइन कंटेंट पर नियंत्रण से जुड़ा बड़ा मुद्दा अभी भी खुला है, उम्मीद है कि उचित निर्देश तैयार करने से पहले कोर्ट दिव्यांग लोगों के सुझावों पर विचार करेगा। इंडियाज गॉट लेटेंट को लेकर विवाद तब शुरू हुआ जब अलग–अलग राज्यों में कई शिकायतें और एफआईआर दर्ज की गईं, जिनमें अश्लीलता और अभद्र भाषा के आरोप शामिल थे। यूट्यूबर रणवीर अल्लाहबादिया ने भी अपने खिलाफ मामलों में राहत पाने के लिए सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था, जिसमें कठोर कार्रवाई से सुरक्षा की मांग भी शामिल थी। कोर्ट ने पहले उन्हें गिरफ्तारी से अंतरिम सुरक्षा दी थी। हालांकि, श्वार एंड बेंच के अनुसार, उनकी अलग याचिका अभी भी सुप्रीम कोर्ट में लंबित है।

आवारापन 2 और बंटवारा 1947 के क्लेश पर क्या बोले विशेष भट्ट? बताया पहले कब रिलीज होने वाली थी फिल्म

आज बॉलीवुड की दो फिल्में आवारापन 2 और बंटवारा 1947 एक ही दिन सिनेमाघरों में रिलीज हुई हैं। सिनेमाघरों में दोनों फिल्मों के टकराव पर फिल्ममेकर विशेष भट्ट ने बताया कि रिलीज डेट एक ही दिन क्यों पड़ गई। उन्होंने कहा कि दोनों फिल्मों के बीच टकराव जानबूझकर प्लान नहीं किया गया था। एएनआई से बातचीत में आवारापन 2 के फिल्ममेकर विशेष भट्ट ने कहा कि शुरू में फिल्म के जल्दी रिलीज होने की उम्मीद थी, मगर इमरान हाशमी के घायल होने के बाद शूटिंग में देरी हुई। भट्ट ने कहा, असल में हमने इसे टकराव के तौर पर प्लान नहीं किया था। हमें लगा था कि हमारी फिल्म अप्रैल में रिलीज होगी, मगर दिसंबर में शूटिंग के दौरान इमरान घायल हो गए, इसलिए हमें शूटिंग रोकनी पड़ी। भट्ट ने आगे कहा बाद में रिलीज कैलेंडर में कई बदलाव हुए क्योंकि कई फिल्मों की तारीखें बदली गईं। हम अप्रैल से पहले की तारीख देख रहे थे। अप्रैल के आसपास युद्ध शुरू हो गया था। इस वजह से टॉक्सिक और कई अन्य फिल्में आगे बढ़ रही थीं। पूरा कैलेंडर ही बदल रहा था। उन्होंने कहा डिस्ट्रीब्यूटर्स ने हमें बताया कि श्बंटवाराश 14 तारीख को आ रही है, लेकिन हमारी फिल्म अलग तरह की थी। ऐसे में उन्हें लगा कि दोनों फिल्में एक साथ रिलीज हो सकती हैं क्योंकि छुट्टियों के दौरान फिल्में अच्छा प्रदर्शन कर सकती हैं। भट्ट ने कहा लोगों ने मुझे बार–बार कहा कि इस बार काफी गुंजाइश है और हमें तारीख की घोषणा कर देनी चाहिए। मैंने हां कह दिया। डिस्ट्रीब्यूटर्स और सिनेमा मालिकों को भी यह तारीख अच्छी लगी, इसलिए मैंने इसे चुन लिया। 2007 की कल्ट फिल्म का सीक्वल आवारापन 2 आज सिनेमाघरों में रिलीज हुई है, जो आजादी के दिन की छुट्टियों के समय के साथ मेल खाती है। इमरान हाशमी इस फिल्म में शिवम पंडित का अपना रोल फिर से निभा रहे हैं।

सावन के महीने में पवन सिंह का धमाका, नया भोजपुरी गाना गनु के पापा रिलीज, जमकर बरसे व्यूज

पवित्र सावन मास चल रहा है। भोजपुरी इंडस्ट्री में नए–नए धार्मिक गीतों के रिलीज होने का सिलसिला जारी है। अक्षरा सिंह ने महादेव की दीवानी गाना रिलीज किया तो खेसारी लाल यादव ने ए देवघर के राजा गाना पेश किया। पावर स्टार पवन सिंह भी महादेव को समर्पित सॉन्ग लेकर आए हैं, जिसका नाम है– गनु के पापा। पवन सिंह का गाना गनु के पापा आज 14 अगस्त को पवन सिंह के ऑफिशियल यूट्यूब चैनल पर रिलीज हुआ है। इसे पवन सिंह ने अपनी सुरीली आवाज से सजाया है। सिंगिंग के साथ–साथ यह गाना उन पर फिल्माया भी गया है। इसमें पावर स्टार कांवड़िए बने दिखे हैं। पवन सिंह के इस गाने को दर्शकों का अच्छा रेस्पॉन्स मिल रहा है। करीब पौने दस बजे रिलीज हुए गाने को दोपहर तक लाखों व्यूज मिल चुके हैं। खबर लिखे जाने तक इस गाने को 1.4 व्यूज मिले। इसी के साथ गाने की तारीफ भी खूब हो रही है। यूजर ने लिखा है, दमदार गाना है। इसलिए आपको पावर स्टार कहते हैं। बता दें कि गाने के लिरिक्स बॉस रामपुरी ने लिखे हैं। निर्देशन गोल्डी जायसवाल ने किया है। वहीं, म्यूजिक डायरेक्शन संग्राम आकाश है। पावर स्टार इन दिनों शो भोजपुरी बवालश में नजर आ रहे हैं। इसमें निरहुआ, आम्रपाली दुबे समेत कई भोजपुरी स्टार्स नजर आ रहे हैं। शो के आगामी एपिसोड में राधे मां बतौर गेस्ट बनकर पहुंची हैं। इस दौरान उन्होंने पवन सिंह की पर्सनल लाइफ पर टिप्पणी की। राधे मां सामने आए प्रोमो में पवन सिंह की तीसरी शादी की भविष्यवाणी करती दिखीं। दरअसल, भारती सिंह प्रोमो में राधे मां से कहती हैं, श्मां पवन भाई को अच्छा जीवन साथी मिले इस मामले में पवन सिंह जी ने बहुत बार धोखा खाया है। इसके बाद राधे मां भोजपुपी पावर स्टार के माथे को पढ़ते हुए कहती हैं, इसका दिल बहुत साफ है। इसको 45 साल की उम्र में बहुत ही अच्छी लविंग वाइफ मिलेगी।

शर्म आनी चाहिए, बेटी की उम्र की लड़की को लेकर घूम रहाश्य किसके साथ गोविंदा को देख भड़कीं सुनीता?

अभिनेता गोविंदा इन दिनों अपनी आगामी फिल्म रूपा को लेकर सुर्खियों में हैं। इसमें उनके साथ नया चेहरा कोमल रानी स्वर्णकार मुख्य अभिनेत्री के तौर पर नजर आएंगी। वे इस फिल्म से डेब्यू कर रही हैं। इस बीच चीची और कोमल का एक वीडियो वायरल हो रहा है। इस पर गोविंदा की पत्नी सुनीता आहूजा ने काफी सख्त प्रतिक्रिया दी है। गोविंदा लंबे अरसे बाद फिल्म रूपा से कमबैक करने को तैयार हैं। बीते दिनों एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में अभिनेता ने फिल्म से जुड़ी डिटेल्स साझा की थी। फिल्म में उनके साथ कोमल रानी स्वर्णकार नजर आएंगी। दोनों के कथित अफेयर की चर्चाएं भी बी–टाउन में छाई हुई हैं। डेटिंग की रूमर्स के बीच गोविंदा और कोमल को साथ में देखा गया। वीडियो वायरल हो रहा है। गोविंदा के इस वायरल वीडियो पर जब उनकी पत्नी सुनीता आहूजा से सवाल किया गया तो उन्होंने काफी तल्ख टिप्पणी की। दरअसल, पैपराजी ने सुनीता से पूछा, गोविंदा प्रमोशन कर रहे है मूवी का कोमल रानी के साथश। इस पर सुनीता आहूजा ने कहा, फिल्म बनी भी तो चाहिए प्रमोशन के लिए। प्रमोशन फिल्म बनने के बाद होता है। ये बिना फिल्म के ही प्रमोशन कर रहे हैं। क्या बोलने का। बेटी की उमर की लड़की को ले लेकर घूम रहा है। शर्म तो आनी चाहिए। कोई स्टैंडर्ड तो होना चाहिए। सुनीता ने कोमल पर भी अप्रत्यक्ष रूप से कमेंट किया। उन्होंने किसी का नाम लिए बिना कहा, तुम्हारा शुगर डैडी इतना अमीर है, कपड़े तो ढंग के पहनो। हम लोगों को देखो क्या स्टाइल में चलते हैं। बहुत खराब बात है। उनका दिमाग खराब हो गया है। गोविंदा आखिरी बार 2019 में आई फिल्म 'रंगीला राजा' में नजर आए थे, जिसमें उन्होंने डबल रोल निभाया था। इसके अलावा 2022 में वो 'नाम था कन्हैयालाल' डॉक्यूमेंट्री में भी दिखाई दिए थे।

वर्किंग वूमेन दमकती त्वचा के लिए अपनाएं ये ब्यूटी टिप्स, दिन भर खूबसूरत और फ्रेश रहेंगी आप

वर्किंग वूमेन के लिए सबसे मुश्किल काम होता है कि अपनी स्किन का ख्याल रखना। क्योंकि उनके पास समय कि कमी होती है। ऐसे में अक्सर वर्किंग वूमेन मेकअप से अपनी स्किन को छुपा लेती हैं। लेकिन उससे भी कोई खास फायदा नहीं होता है। बल्कि इससे उनकी स्किन टोन और ज्यादा डल होने लगती है। अगर आप भी यही गलती करती हैं तो रुक जाएं। वरना आपको कई स्किन संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में इससे छुटकारा पाने के लिए आपको इन ब्यूटी टिप्स को फॉलो करना चाहिए।

डीप क्लींजिंग

अगर आपके पास समय की कमी है तो आप सप्ताह में एक बार या दो बार डीप क्लीन करवा सकती हैं। इसके लिए आप होममेड स्क्रब का भी उपयोग कर सकती हैं। वहीं महीने में एक बार पेशियल जरूर करवाएं। इससे आपकी स्किन रिलेक्स होने के साथ ही चेहरे के पोर्स को भी साफ रखने में सहायता मिलेगी। इस टिप्स को फॉलो करने से पिंपल्स जैसी समस्याएं कम होंगी।

फेस मास्क शीट

वर्किंग वूमेन के पास पार्लर जाने का समय नहीं होता है। जिससे कि वह अपना स्किन ट्रीटमेंट करवा सकें। ऐसे में आपको घर पर ही चेहरे पर फेस मास्क शीट को लगाना है। इससे आपकी त्वचा नरिश होगी। फेस मास्क शीट को अपने चेहरे पर कम से कम 10 मिनट तक अप्लाई करें। इसे आप अपनी डेली रूटीन में भी इस्तेमाल कर सकती हैं। इससे आपकी त्वचा हाइड्रेट होने के साथ ही ग्लोइंग नजर आएगी।

फेशियल स्प्रे

मार्केट में आपको कई तरह के स्किन स्प्रे मिल जाएंगे। जिनको आप अपने फेस पर इस्तेमाल कर सकती हैं। यह आपके फेस को माइश्चराइज करने के साथ ही हाइड्रेट भी करते हैं। आप दिन में 3–4 बार इसका इस्तेमाल कर सकती हैं। आप चाहें तो होममेड तरीके से भी फेशियल स्प्रे बनाकर तैयार कर सकती हैं।

लिप बाम

अपनी त्वचा के साथ ही साथ होंठों को भी हाइड्रेट रखना जरूरी होता है। वरना रूखे होठ आपका पूरा लुक बर्बाद कर सकते हैं। ऐसे में आपको हर थोड़े समय के बाद लिप बाम का इस्तेमाल करना चाहिए। इससे आपके होंठ मुलायम बने रहेंगे। आप चाहें तो घर पर भी लिप बाम बनाकर तैयार कर सकती हैं।

चेहरे पर हो गए है डार्क स्पॉट तो इस एक तरह से करें दूर

बेदाग चेहरा हर किसी को पसंद होता है। फिर वो चाहे लड़की हो या फिर लड़का। लेकिन एक्ने, मुंहासे और चेहरे पर दिखने वाली झाईयां, अक्सर बेदाग चेहरे के सपने को पूरा नहीं होने देती। ऐसे में अक्सर लड़कियां कई सारे नुस्खे आजमाती हैं। अगर डार्क स्पॉट चेहरे की खूबसूरती को बिगाड़ रहे हैं तो इस एक नुस्खे की मदद से आसानी से दूर किया जा सकता है। ये घरेलू नुस्खा चेहरे को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचाएगा। वहीं क्लियर ग्लोइंग स्किन भी आसानी से मिल जाएगी।

नारियल के तेल का करें इस्तेमाल

नारियल के तेल का इस्तेमाल स्किन के लिए हमेशा अच्छा होता है। अगर आप ड्राई स्किन की मालकिन हैं तो कोकोनट ऑयल बेस्ट ऑप्शन है। क्योंकि ये स्किन को गहराई तक मॉइश्चराइज करता है। किसी बाउल में एक चौथाई चम्मच नारियल का तेल लें। इसमे दो से तीन बूंद नींबू के रस की मिला लें।

इतनी देर करें मसाज

नारियल के तेल और नींबू के रस के इस मिक्सचर को चेहरे पर अप्लाई करें और एक मिनट तक मसाज करें। फिर किसी माइल्ड फेस वॉश से चेहरे को साफ कर लें। अगर स्किन ड्राई लग रही है तो मॉइश्चराइजर लगाएं। नहीं तो इसे ऐसे ही छोड़ दें। नारियल का तेल स्किन को नेचुरली सॉफ्ट और ग्लोइंग बनाती है। नींबू के रस में नेचुरल ब्लीजिंग एजेंट होते हैं जो स्किन को ग्लोइंग बनाने के साथ ही स्किन के सांवलेपन को भी खत्म करते हैं।

इस बात का रखें ध्यान

–अगर चेहरे पर हमेशा एक्ने और मुंहासे रहते हैं तो नारियल के तेल का इस्तेमाल ना करें।

–ऑयली या कॉम्बिनेशन वाली स्किन पर नारियल का तेल लगाने से पहले पैच टेस्ट करना जरूरी है।

–नारियल के तेल को स्किन पर बहुत देर तक ना लगे रहने दें। तय समय बाद इसे फेसवॉश से क्लीन कर दें। नहीं तो पोर्स क्लॉग होने की समस्या परेशान कर सकती है।

देवघर के आसपास मौजूद इन बेहतरीन जगहों को जरूर करें एक्सप्लोर, यादगार होगा ट्रिप

देशभर में सावन माह को अत्यंत पवित्र माह माना जाता है। सावन का महीना भगवान शिव को अतिप्रिय है। सावन के महीने में लाखों–करोड़ों भक्त गंगा जल भगवान शिव को अर्पित करने के लिए पवित्र और फेमस शिवालय में पहुंचते रहते हैं। वहीं झारखंड का देवघर भी एक ऐसा शहर हैं, जहां पौराणिक काल से भगवान शिव शिवलिंग के रूप में विराजमान हैं। हर साल लाखों भक्त जल अर्पित करने और दर्शन करने के लिए देवघर में पहुंचते हैं। ऐसे में अगर इस सावन आप भी देवघर जा रहे हैं और वहां की फेमस जगहों को एक्सप्लोर करना चाहते हैं। तो यह आर्टिकल आपके लिए हैं। हम इस आर्टिकल के जरिए आपको देवघर की कुछ शानदार जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं।

त्रिकूट पर्वत

अगर आप देवघर के आसपास किसी मनमोहक और खूबसूरत जगह जाना चाहते हैं। तो आपको त्रिकूट पर्वत को जरूर एक्सप्लोर करना चाहिए। यह पर्वत अपने हसीन और मनमोहक दृश्यों के लिए काफी ज्यादा फेमस है। यह जगह वॉटरफॉल के लिए भी फेमस है। पर्वत के पास से निकलने वाली मयूराक्षी नदी बेहद खूबसूरत झरनों का निर्माण करती है। आप त्रिकूट पर्वत पर ट्रैकिंग और रोपवे का भी लुत्फ उठा सकते हैं। सूर्यास्त के बाद यहां का नजारा आपको मिस नहीं करना चाहिए।

नौलाखा मंदिर

देवघर से करीब 2 किमी की दूरी पर नौलाखा मंदिर मौजूद है। यह मंदिर काफी ज्यादा फेमस और पवित्र है। बता दें कि यह मंदिर भगवान श्रीकृष्ण और राधा रानी को समर्पित है। बताया जाता है कि इस मंदिर का निर्माण 9 लाख रुपए में कराया गया था। नौलाखा मंदिर 146 फीट ऊंचा है। इसके साथ ही यह मंदिर जंगलों के बीचो–बीच में होने से आसपास खुशनुमा नजारा देखने को मिलता है।

नंदन पहाड़

देवघर से कुछ दूरी पर नंदन पहाड़ मौजूद है। यह भले ही थोड़ा छोटा है, लेकिन देखने में काफी ज्यादा खूबसूरत है। इसे एक खूबसूरत पार्क के रूप में भी जाता है। बता दें कि स्थानीय लोग इस स्थान पर पिकनिक मनाने के लिए पहुंचते हैं। इस पार्क में एक छोटा सा और खूबसूरत तालाब भी है। ऐसे में आप यहां पर एडवेंचर एक्टिविटीज भी कर सकते हैं। नंदन पहाड़ अपने सनसेट और सनराइज के लिए भी काफी फेमस है।

तपोवन हिल्स और गुफाएं

देवघर के साथ–साथ इसके आसपास मौजूद अन्य शहरों में भी तपोवन हिल्स और गुफाएं काफी फेमस पर्यटक स्थान माना जाता है। यह जगह भगवान शिव के मंदिर के लिए भी काफी फेमस है। तपोवन हिल्स में कई सारी गुफाएं हैं। बताया जाता है कि इस गुफा में भगवान भोलेनाथ का शिवलिंग भी स्थापित है। साथ ही इसी स्थान पर वाल्मीकि तपस्या करने के लिए पहुंचे थे। सावन में कुछ भक्त यहां पर जल अर्पित करने के लिए पहुंचते हैं।

बच्चों को बर्बाद कर सकती हैं, आपकी ये 5 गंदी हरकतें

हर कोई चाहता है कि उसके बच्चे में संस्कार, सहनशीलता और सभ्यता जैसे गुण हों। हालांकि कई बार घर के सदस्य ही अनजाने में ऐसा व्यवहार करते हैं जो बच्चों पर गलत असर डालता है। छोटे बच्चे मां–बाप और परिवार के सदस्यों से ही आदतें सीखते हैं। कई बातों का उनके सबकॉन्शस माइंड पर इतना खराब असर बड़ता है कि जीवनभर के लिए उनकी पर्सनैलिटी में वो गलत आचरण आ जाता है। अगर आप चाहते हैं कि आपके बच्चे की हर कोई तारीफ करे तो उसके सामने भूलकर भी ये गलतियां न करें।

आपस में चीखना–चिल्लाना

आप बच्चे के सामने किसी से चिल्लाकर बात करते हैं तो ऐसा करना उसे सामान्य लगता है। बच्चा कई बार खुद को बड़ों जैसा दिखाने के लिए उनकी तरह व्यवहार करने की कोशिश करता है। ऐसे में बेहद जरूरी है कि सबका सम्मान करें। बच्चे को हर बात पर डांटे या चिल्लाएं नहीं। चिल्लाने से बच्चा विद्रोही बनता है जबकि प्यार से आप उसे काबू में कर सकते हैं।

गुस्से में न दें सीख

जब बच्चा किसी बात पर रो रहा हो या जिद कर रहा हो तब उसे कोई ज्ञान या अनुशासन मत सिखाएं। जब वह जिद करे तो बेहतर होगा कि उसको इग्नोर करें। जब शांत हो तो उसे समझाएं कि उसका ऐसा करना क्यों गलत है।

आपस में न झगड़ें

बच्चे के सामने हमेशा अपने पार्टनर का सम्मान करें। ऐसा करने से वो भी कभी पेरेंट्स के सामने बदतमीजी करने की हिम्मत नहीं कर पाएगा। अगर किसी बात पर मतभेद हो तो वहां से बच्चे को हटा दें। बच्चे के सामने झगड़ें नहीं, इससे उसके दिमाग पर असर पड़ेगा और वह इनसिक्योर हो जाएगा।

कॉन्टेंट पर रखें नजर

बच्चे हमेशा दूसरों को कॉपी करते हैं। कई बार पेरेंट्स ध्यान नहीं देते तो बच्चे टीवी से भी गलत आदतें सीख लेते हैं। बच्चे को टीवी के सामने बैठाकर या मोबाइल देकर बेफिक्र न हो जाएं। वह क्या देख रहा है इस पर जरूर ध्यान दें। आजकल कई कार्टून्स में भी आपत्तिजनक सीन या डायलॉग्स होते हैं। लिहाजा बच्चा कार्टून्स देख रहा है, सोचकर बेफिक्र न हों। वह गलत व्यवहार करे तो सबको बताकर हंसे नहीं बल्कि उसे समझाएं कि ऐसा करना गलत है।

न करें किसी की बुराई

बच्चे के सामने स्कूल टीचर्स या अपने किसी फैमिली मेंबर की बुराई न करें। इसके अलावा अपनी फाइनेंशियल प्रॉब्लम्स, इंटीमेट रिलेशनशिप या अमर्यादित शब्द भी बच्चे के सामने न बोलें।

बच्चों में डेंगू के लक्षणों को न करें अनदेखा, हेल्थ एक्सपर्ट्स से जानें बचाव के टिप्स

बारिश के मौसम में वेक्टर जनित बीमारियों की संभावना अधिक बढ़ जाती है। बारिश के मौसम में डेंगू, चिकनगुनिया और मलेरिया जैसी बीमारियां तेजी से फैलती हैं। बच्चों में इन बीमारियों का खतरा सबसे ज्यादा रहता है। बता दें कि डेंगू का बुखार एजिप्टी एडीज नामक मच्छर के काटने से होता है। हालांकि बच्चे में डेंगू के लक्षण पेरेंट्स जल्दी पहचान नहीं पाते हैं। इस संक्रमण में सबसे पहले बुखार आता है। फिर धीरे–धीरे परेशानियां बढ़ने लगती है। डेंगू संक्रमण के लक्षण 3–4 दिन बाद गंभीर होने लगते हैं। बच्चों में डेंगू के लक्षणों पर ध्यान न देना सेहत के लिए नुकसानदायक हो सकता है। कुछ गलतियां होने पर यह जानलेवा भी हो सकता है।

हेल्थ एक्सपर्ट्स की मानें तो बच्चों में रोग प्रतिरोधक क्षमता बेहद कमजोर होती है। जिसकी वजह से उनका संक्रमण की चपेट में आने का खतरा अधिर रहता है। ऐसे में अगर बच्चों में डेंगू के लक्षणों की पहचान शुरूआती दिनों में करने और समय पर सही इलाज मिलने पर यह संक्रमण जानलेवा नहीं होता है। लेकिन ज्यादातर पेरेंट्स सही समय पर बच्चों में डेंगू के लक्षणों को पहचान नहीं पाते हैं। शुरुआत में ही देखभाल करने से इसका खतरा काफी हद तक कम हो जाता है। इस बीमारी में मरीज की प्लेटलेट्स तेजी से कम होने लगती हैं।

डेंगू के लक्षण

आमतौर पर डेंगू के बुखार में फ्लू जैसे लक्षण नजर आते हैं। डेंगू संक्रमण होने पर मांसपेशियों और शरीर में दर्द होता है। वहीं बच्चे इस परेशानी को सही से व्यक्त नहीं कर पाते हैं और पेरेंट्स इन्हें सामान्य फ्लू समझ लेते हैं। ऐसी करना बच्चे की सेहत के लिए नुकसानदेह हो सकता है। इसलिए डेंगू के इन लक्षणों के दिखते ही फौरन जांच करवानी चाहिए।

नाक और मसूड़ों से खून आना

शरीर में दर्द और मांसपेशियों में कमजोरी

तेज बुखार और शरीर का तापमान बढ़ना

उल्टी और दस्त की समस्या

भूख में कमी और खराब पाचन

बच्चों में चिड़चिड़ापन

शरीर पर चकत्ते और दाने

तेजी से सांस लेना

आमतौर पर डेंगू का बुखार बच्चों में तीन स्टेज में होता है। पहले स्टेज में मरीज को हल्के बुखार के साथ थकान की समस्या होती है। पहले चरण में 2–7 दिन के लिए बुखार रहता है। इस चरण में बच्चे को थकान, कमजोरी, मांसपेशियों में दर्द और बुखार की समस्या होती है। वहीं दूसरे चरण में बच्चे को मतली के साथ उल्टी और प्लेटलेट्स काउंट में कमी आने लगती है। तीसरे चरण में पहुंचने पर डेंगू से संक्रमित मरीज को ब्लीडिंग हो सकती है।

बचाव टिप्स

बच्चों को डेंगू की चपेट में आने से बचाने के लिए अभिभावकों को कुछ सावधानियों का ध्यान रखना होता है। इसके लिए ध्यान रखें कि बच्चों को मच्छरों के काटने से बचाने का प्रयास करें। वहीं संक्रमण के लक्षणों को पहचानकर समय से इलाज लेने से इसका खतरा कई गुना तक कम किया जा सकता है। घर से बाहर निकलने के दौरान बच्चे को फुल आस्तीन के कपड़े पहनाएं। इसके अलावा आसपास की जगहों पर साफ–सफाई बनाए रहें और पानी जमा न होने दें। सही समय पर लक्षणों को पहचानकर इलाज देना सबसे बड़ा बचाव है।

संक्षिप्त

शेयर बाजार में कमजोरी बरकरार, सेंसेक्स 70 अंक टूटा, निफ्टी 24400 के नीचे

मुंबई,एजेंसी। भारतीय शेयर बाजार हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन लाल निशान पर बंद हुआ। बीएसई सेंसेक्स 70.71 अंक गिरकर 78,009.25 पर आ गया। वहीं, एनएसई निफ्टी भी 29.85 अंक की गिरावट के साथ 24,366.00 पर बंद हुआ। तेल की कीमतें 87 डॉलर प्रति बैरल के आसपास स्थिर होने के बावजूद भारतीय बाजार एक सीमित दायरे में कारोबार करता रहा। बाजार में व्यापक कमजोरी देखने को मिली। अधिकांश क्षेत्रीय सूचकांक नकारात्मक क्षेत्र में कारोबार कर रहे थे। तेल की कीमतों में स्थिरता के बावजूद बाजार एक सीमित दायरे में ही घूमता रहा। जियो फिन के शेयर में 3 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई। एशियन पेंट्स के शेयर भी दो फीसदी नीचे बंद हुए। निवेशकों का समग्र रुख सतर्क बना रहा। बाजार में बिकवाली का दबाव व्यापक रूप से देखा गया। यह स्थिति निवेशकों के बीच अनिश्चितता को दर्शाती है। धातु क्षेत्र के शेयर सबसे ज्यादा पिछड़ने वाले रहे। इसके बाद सूचना प्रौद्योगिकी, उपभोक्ता वस्तुएं और सीमेंट क्षेत्र में भी कमजोरी दिखी। वित्तीय कंपनियों के शेयरों में भी गिरावट दर्ज की गई। तेल और गैस, दवा तथा स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के शेयर भी नीचे आए। यह बाजार में फैली व्यापक कमजोरी को दर्शाता है। उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुएं क्षेत्र ने प्रमुख रूप से बेहतर प्रदर्शन किया। इस क्षेत्र के शेयरों में मजबूती देखने को मिली। निजी बैंक और रियल्टी क्षेत्र भी अपेक्षाकृत मजबूत बने रहे। इन क्षेत्रों ने बाजार की गिरावट के बावजूद कुछ हद तक अपनी पकड़ बनाए रखी। हालांकि, समग्र बाजार का रुख नकारात्मक ही रहा। टोक्यो समय अनुसार दोपहर 12रू50 बजे तक एसएंडपी 500 वायदा में थोड़ा बदलाव आया। जापान का निक्केई 225 वायदा 0.7 फीसदी बढ़ा। जापान का टॉपिक्स भी 0.6 फीसदी की वृद्धि के साथ बंद हुआ। ऑस्ट्रेलिया का एसएंडपीध्एएसएक्स 200 सूचकांक 0.9 फीसदी नीचे आया। हांगकांग का हैंग सेंग सूचकांक 0.9 फीसदी गिरा। शंघाई कंपोजिट में 0.2 फीसदी की गिरावट दर्ज की गई। यूरो स्टॉक्स 50 वायदा 0.3 फीसदी ऊपर रहा।

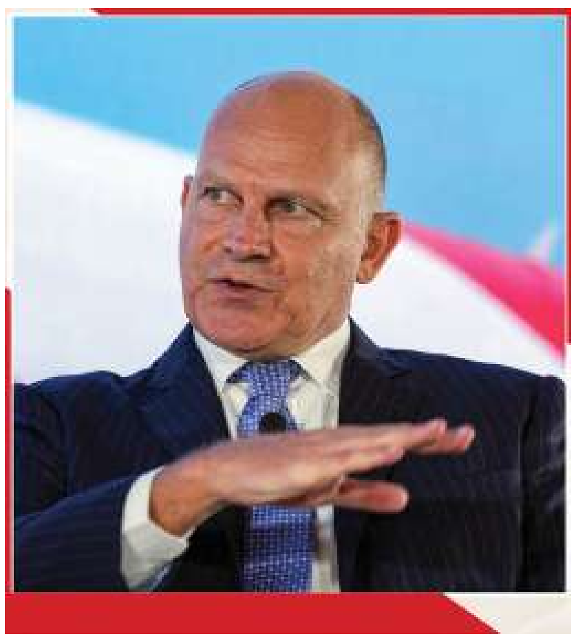

गलत काम करोगे तो भुगतोगे गंभीर परिणाम, एअर इंडिया सीईओ की एयरलाइन कर्मचारियों को दो टूक

नई दिल्ली,एजेंसी। एयर इंडिया के मुख्य कार्यकारी अधिकारी कैंपबेल विल्सन ने गुरुवार को कर्मचारियों को ईमानदारी से काम करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि जब कोई न देख रहा हो, तब भी सही काम करें। विल्सन ने कर्मचारी यात्रा विशेषाधिकारों के दुरुपयोग सहित कई मुद्दों पर प्रकाश डाला। उन्होंने गलत काम करने के गंभीर परिणामों की भी चेतावनी दी। विल्सन की यह टिप्पणी एक टाउनहॉल बैठक के दौरान आई। यह मुख्य रूप से जनवरी 2022 में निजीकरण के बाद से विभिन्न उल्लंघनों के लिए करीब 1,000 लोगों की सेवा समाप्ति के संदर्भ में थी। सूत्रों के अनुसार, विल्सन ने कहा कि अभी भी ऐसे मामले हैं जहां लोग नियमों और विनियमों को खुद पर लागू नहीं मानते। उन्होंने जोर देकर कहा कि गलत काम करने के अवसर कम होते जा रहे हैं। गलत काम करने के परिणाम केवल बढ़ते जाएंगे। विल्सन ने कर्मचारियों से गलत काम देखने पर उसकी रिपोर्ट करने को कहा। उन्होंने यह भी बताया कि एयरलाइन ने निजीकरण के बाद से दुरुपयोग को रोकने और उससे निपटने के लिए प्रणाली और नियंत्रण लागू किए हैं। इन प्रणालियों को और मजबूत किया जाएगा। विल्सन ने स्पष्ट किया कि गलत काम करने के परिणाम लगातार बढ़ेंगे। जनवरी 2022 में टाटा समूह द्वारा एयर इंडिया के अधिग्रहण के बाद से, लगभग 1,000 कर्मचारियों को विभिन्न उल्लंघनों के कारण सेवा से बर्खास्त किया गया है। यह दर्शाता है कि प्रबंधन कदाचार के प्रति सख्त रुख अपना रहा है। विल्सन ने कहा कि अब गलत काम करके बच निकलने की संभावना कम होती जा रही है। उन्होंने कर्मचारियों को नियमों का पालन करने की सख्त हिदायत दी। विल्सन की टिप्पणियां एक ऐसी घटना के बाद आई हैं, जिसमें एक पायलट–इन–कमांड का नाम सामने आया। यह पायलट फुकेत–दिल्ली उड़ान का था। 4 अगस्त को इस पायलट का साइकोएक्टिव पदार्थ के लिए परीक्षण सकारात्मक आया था। इसी उड़ान ने क्रूज के दौरान अचानक 300 फीट की ऊंचाई खो दी थी। हालांकि, विल्सन ने सीधे तौर पर इस घटना का जिक्र नहीं किया। यह मामला कर्मचारियों के बीच अनुशासन की कमी को उजागर करता है। एयर इंडिया ने निजीकरण के बाद से दुरुपयोग को रोकने के लिए कई प्रणालियां शुरू की हैं। इन प्रणालियों का उद्देश्य कदाचार को पकड़ना और उससे निपटना है। विल्सन ने कहा कि एयरलाइन इन नियंत्रणों को लगातार मजबूत करती रहेगी। टाटा समूह ने जनवरी 2022 में घाटे में चल रही एयरलाइन का अधिग्रहण किया था। विल्सन अगले महीने एयरलाइन छोड़ देंगे, क्योंकि उन्होंने मुख्य कार्यकारी अधिकारी और प्रबंध निदेशक पद से इस्तीफा दे दिया है।

गुरनूर और प्रसिद्ध में किसे मिलेगा मौका? गिल ने बताया, भारत के 600वें टेस्ट पर कही यह बात

गॉल,एजेंसी। भारत और श्रीलंका के बीच दो टेस्ट मैचों की सीरीज का पहला मुकाबला शनिवार से गॉल में खेला जाएगा। यह भारतीय क्रिकेट के लिए ऐतिहासिक मौका होगा, क्योंकि यह टीम इंडिया का 600वां टेस्ट मैच है। खास बात यह है कि मुकाबला भारत के स्वतंत्रता दिवस यानी 15 अगस्त से शुरू हो रहा है। इस ऐतिहासिक मुकाबले से पहले कप्तान शुभमन गिल ने कहा कि अपने देश के 600वें टेस्ट में कप्तानी करना उनके लिए बेहद खास अनुभव है। गिल ने कहा, अपने देश के 600वें टेस्ट में कप्तानी करना सम्मान की बात है और स्वतंत्रता दिवस पर ऐसा करना इससे भी बड़ा सम्मान है। गिल के लिए यह मुकाबला कप्तान के तौर पर भी अहम है। उन्होंने कहा कि अब वह अपनी भूमिका में सहज महसूस कर रहे हैं और टीम का सबसे बड़ा लक्ष्य विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल की दौड़ में बने रहना है। भारत इस समय विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के मौजूदा चक्र में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए संघर्ष कर रहा है। गिल ने साफ किया कि टीम को आगे लगातार जीत दर्ज करनी होगी। भारतीय कप्तान ने कहा, श्अब मैं कप्तान के तौर पर अपनी भूमिका में सहज हूं। हमारा लक्ष्य विश्व टेस्ट चौंपियनशिप के फाइनल की दौड़ में बने रहना है। इसके लिए हमें छह या सात टेस्ट जीतने होंगे। इसलिए हम यहां से इसकी शुरुआत करना चाहते हैं। श्रीलंका के खिलाफ पहला टेस्ट भारत के लिए इसी अभियान की शुरुआत माना जा रहा है। इसके बाद टीम को न्यूजीलैंड में दो मैचों की महत्वपूर्ण टेस्ट सीरीज खेलनी हैं। फिर भारत को अपने घर में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज खेलनी है।

जसप्रीत बुमराह की गैरमौजूदगी भारत के लिए बड़ा झटका है। ऐसे में टीम के युवा और कम अनुभवी गेंदबाजों पर अतिरिक्त जिम्मेदारी होगी। गिल ने हालांकि इसे चुनौती के साथ–साथ दूसरे खिलाड़ियों के लिए मौका भी बताया। उन्होंने कहा, श्जसप्रीत बुमराह यहां नहीं हैं, लेकिन यह किसी और खिलाड़ी के लिए आगे आने का अवसर है। यह सब खेल की गति को समझने और उसके हिसाब से खेलने की बात है। भारत को मोहम्मद सिराज के साथ दूसरे तेज गेंदबाज के चयन को लेकर भी माथापच्ची करनी है। गिल ने युवा तेज गेंदबाज गुरनूर बराड़ की खूबियां बताईं, लेकिन प्रसिद्ध कृष्णा के हालिया प्रदर्शन की भी तारीफ की। ऐसे में उन्होंने संकेत दिया कि दूसरे तेज गेंदबाज का चयन आसान नहीं होगा। गिल ने कहा, गुरनूर बराड़ शानदार हैं, क्योंकि वह अच्छी गति के साथ पुरानी गेंद से उछाल हासिल कर सकते हैं। लेकिन प्रसिद्ध कृष्णा भी हाल में अच्छी गेंदबाजी कर रहे हैं, जैसा कि हमने अभ्यास मैच में देखा। इसलिए यह एक मुश्किल फैसला है। गॉल की परिस्थितियों में भारत तीन स्पिनरों के साथ उतरता है या तेज गेंदबाजी को ज्यादा महत्व देता है, यह भी देखने वाली बात होगी।

भारतीय टीम में कुछ नए चेहरों को मौका मिल रहा है। गिल ने कहा कि युवा खिलाड़ियों से तुरंत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन की उम्मीद करने के बजाय उन्हें समय देना जरूरी है। उन्होंने कहा, श्खिलाड़ी अपने आप आगे बढ़ेंगे। हमें उन्हें समय देना होगा। कुछ खिलाड़ियों को थोड़ा समय चाहिए होता है। साई सुदर्शन की चोट पर गिल ने बताया कि टीम प्रबंधन लगातार खिलाड़ियों के संपर्क में है। उन्होंने कहा, उनके साथ लगातार बातचीत होती रहती है। दुर्भाग्य से साई सुदर्शन उतना सुधार नहीं कर पाए, जितना हम चाहते थे, क्योंकि टेस्ट क्रिकेट में हम जोखिम नहीं ले सकते। लेकिन हमें अपनी 15 खिलाड़ियों की टीम पर पूरा भरोसा है।

रोनाल्डो की शादी में बड़ा समझौता! तलाक हुआ तो जॉर्जिना को हर महीने मिलेंगे 1.10 करोड़ रुपये?

लिस्बन,एजेंसी। दुनिया के महानतम फुटबॉलर्स में शुमार पुर्तगाल के क्रिस्टियानो रोनाल्डो आखिरकार शादी के बंधन में बंधा गए। उन्होंने 11 अगस्त को अर्जेंटीनी–स्पैनिश मॉडल जॉर्जिना रोड्रिगेज से शादी की। 41 वर्षीय रोनाल्डो और 32 साल की जॉर्जिना की शादी भले ही बेहद निजी रही हो, लेकिन इस हाई–प्रोफाइल जोड़े की शादी से जुड़ी आर्थिक जानकारी अब चर्चा में है। दोनों की शादी के दस्तावेजों में दर्ज वित्तीय व्यवस्था को लेकर कई दावे सामने आए हैं। मैक्सिको की डिजिटल लाइफस्टाइल और रिलेशनशिप पब्लिकेशन अन परेजा की रिपोर्ट के मुताबिक, रोनाल्डो और जॉर्जिना ने शादी के लिए अलग–अलग संपत्ति रखने की व्यवस्था व्यवस्था को चुना है। इसका मतलब यह है कि दोनों अपनी–अपनी संपत्ति और कमाई पर अलग–अलग अधिकार बनाए रखेंगे। इस व्यवस्था के तहत शादी से पहले और शादी के दौरान अर्जित संपत्ति, कमाई और निवेश को दोनों की व्यक्तिगत संपत्ति माना जाएगा। यानी भविष्य में दोनों अलग होते हैं तो संपत्ति का स्वतः बराबर बंटवारा नहीं होगा। रिपोर्ट के मुताबिक, इस व्यवस्था के कारण रोनाल्डो की फुटबॉल से होने वाली कमाई, विज्ञापन अनुबंध और कारोबारी निवेश उनके अपने नियंत्रण में रहेंगे। इसमें सऊदी प्रो लीग क्लब अल–नस्र से मिलने वाली उनकी कमाई और पेस्टाना सीआर7 होटल चेन जैसे कारोबारी उपक्रम भी शामिल बताए गए हैं। इसका मतलब यह हुआ कि शादी के बाद भी रोनाल्डो की व्यक्तिगत संपत्ति और कमाई पर उनका नियंत्रण बरकरार रहेगा। इसी तरह जॉर्जिना की अपनी संपत्ति और कमाई भी उनके व्यक्तिगत अधिकार में रहेगी। पुर्तगाली मैगजीन टीवी गुइया की एक रिपोर्ट में शादी के रजिस्ट्रेशन से जुड़ी कुछ ऐसी शर्तों का दावा किया गया है, जो अलगाव या तलाक की स्थिति में लागू हो सकती हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, पहली शर्त के तहत जॉर्जिना को रोनाल्डो की ओर से हर महीने करीब एक लाख यूरो, यानी लगभग 1.10 करोड़ रुपये की पेंशन मिल सकती है। हालांकि, यह रकम और शर्तें रिपोर्ट में किए गए दावों पर आधारित हैं। इसके अलावा रिपोर्ट में दावा किया गया है कि मैड्रिड के ला फिन्का स्थित दंपती के आलीशान बंगले पर जॉर्जिना का पूरा स्वामित्व रहेगा। रिपोर्टों के मुताबिक, शादी में रोनाल्डो और जॉर्जिना के पांचों बच्चे मौजूद थे। समारोह के आधिकारिक गवाहों में रोनाल्डो के पुराने करीबी दोस्त

मिगुएल पाशाओ और जॉर्जिना की बहन इवाना रोड्रिगेज के नाम बताए गए हैं।

दिलचस्प बात यह रही कि शादी में रोनाल्डो की पुर्तगाल टीम या अल–नस्र के किसी साथी खिलाड़ी के शामिल होने की खबर नहीं है। दोनों ने अपने सरनेम भी नहीं बदले हैं। इससे पहले फुंचाल कैथेड्रल में भव्य समारोह की अटकलें लगाई जा रही थीं और वहां फैंस और मीडिया की भीड़ जुटने की खबरें थीं। हालांकि, रिसेप्शन या उसके आयोजन स्थल को लेकर अभी कोई आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है। रोनाल्डो और जॉर्जिना ने शादी की तरह इस मामले को भी निजी ही रखा है।

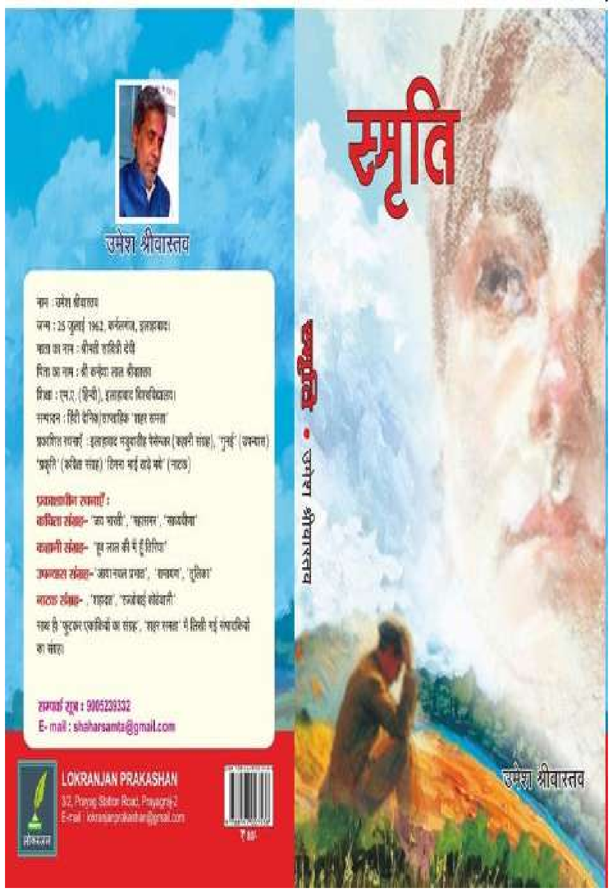

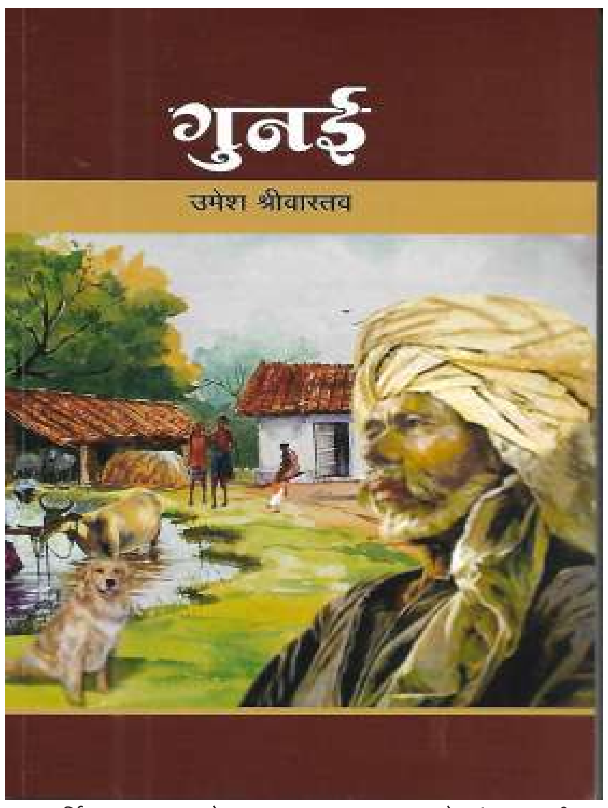

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

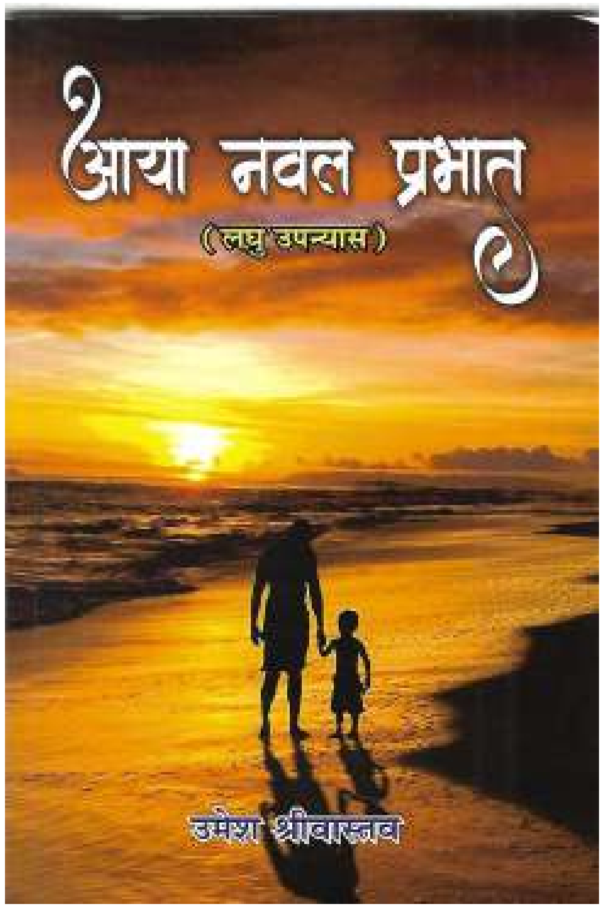

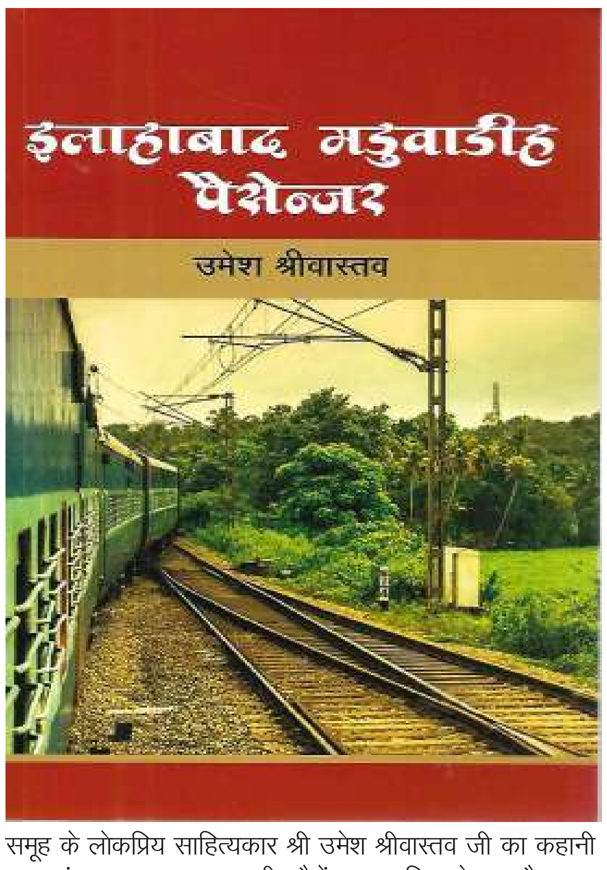

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

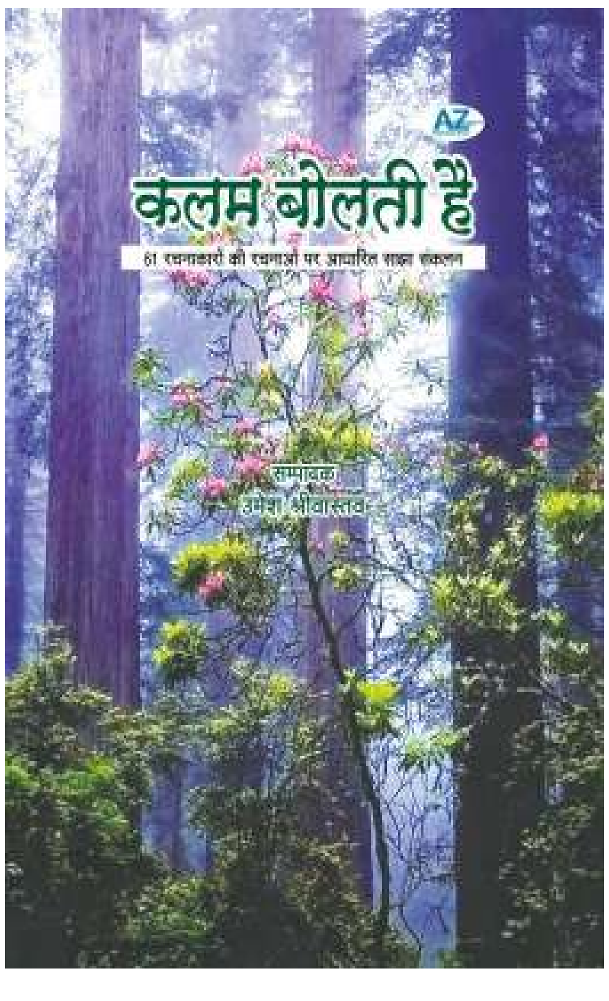

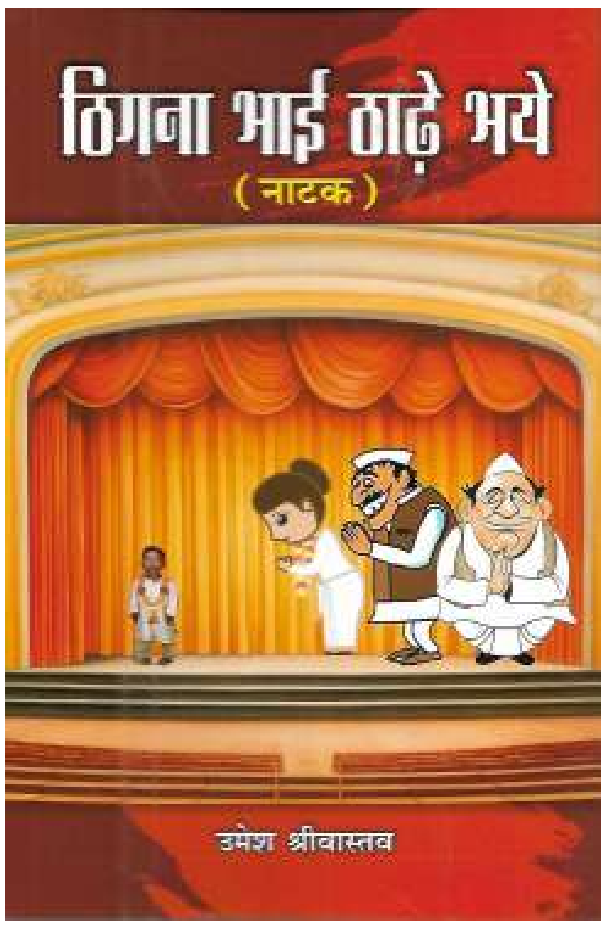

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

इंग्लैंड में पैसेंजर ट्रेन पटरी से उतरी, दो लोग गंभीर रूप से घायल, जांच जारी

लंदन, एजेंसी। दक्षिणी इंग्लैंड में एक पैसेंजर ट्रेन पटरी से उतर गई। इस हादसे में तीन डिब्बे पलट गए, जिससे दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गए और नौ अन्य को मामूली चोटें आईं। यह जानकारी ब्रिटिश परिवहन पुलिस ने दी है। ट्रेन में कितने लोग सवार थे? दरअसल, लंदन के विक्टोरिया स्टेशन से ईस्टबोर्न जा रही श्ससदर्न रेलश की इस ट्रेन में करीब 150 लोग सवार थे। गुरुवार को यह ट्रेन पर्यटकों के बीच मशहूर शहर श्ल्यूसश के बाहर पटरी से उतर गई। यात्री रॉब ब्रैडली ने बताया कि जैसे ही ट्रेन ने रफ्तार पकड़ी, वह हिलने लगी और जिस डिब्बे में वह अपनी छह साल की बेटी के साथ यात्रा कर रहे थे।

भारतीय मूल के व्यक्ति ने बाल यौन शोषण सामग्री रखने का जुर्म कबूला, 20 साल तक की सजा संभव, FBI ने क्या कहा ?

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के न्यू जर्सी में भारतीय मूल के एक व्यक्ति ने बच्चों के यौन शोषण से जुड़ी अवैध सामग्री तक पहुंचने का अपराध संघीय अदालत में कबूल कर लिया है। अमेरिकी न्याय विभाग के अनुसार, हस्ब्रुक हाइट्स निवासी अभिषेक विजयकुमार ने बुधवार को अपना जुर्म स्वीकार किया। मामला मार्च 2024 का है, जब उसने जानबूझकर ऐसी सामग्री तक पहुंच बनाई थी। इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की जांच के दौरान अधिकारियों को 200 से ज्यादा तस्वीरें मिलीं। मामले की गंभीरता को देखते हुए उसे 20 साल तक की जेल की सजा हो सकती है। अभिषेक विजयकुमार पर क्या आरोप था? अभिषेक विजयकुमार पर आरोप था कि उसने मार्च 2024 में बच्चों से जुड़ी यौन शोषण सामग्री को जानबूझकर देखा और उस तक पहुंच बनाई। जांच के दौरान उसके इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की पड़ताल की गई। इसी दौरान अधिकारियों को 200 से अधिक तस्वीरें मिलीं। न्याय विभाग के मुताबिक इनमें ऐसी सामग्री भी शामिल थी, जिसमें एक छोटे बच्चे के साथ यौन शोषण दिखाया गया था। मामले में बुध ावार को संघीय अदालत में विजयकुमार ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया। इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की जांच में क्या सामने आया? जांच अधिकारियों ने विजयकुमार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की पड़ताल की तो 200 से ज्यादा तस्वीरें मिलीं। इन तस्वीरों में बच्चों के यौन शोषण से संबंधित सामग्री शामिल थी। जांच में मिली सामग्री के आधार पर उसके खिलाफ संघीय स्तर पर मामला आगे बढ़ाया गया। अधिकारियों का कहना है कि इस तरह के मामलों में बच्चों के शोषण को रोकना और पीड़ितों की पहचान तथा सुरक्षा सुनिश्चित करना जांच एजेंसियों की प्राथमिकता है। अब विजयकुमार को कितनी सजा हो सकती है? अभिषेक विजयकुमार को अधिकतम 20 साल तक की जेल की सजा हो सकती है। उसकी सजा पर फैसला 6 जनवरी 2027 को होगा। हालांकि, उसे कितनी सजा मिलेगी, इसका अंतिम फैसला संघीय जिला अदालत के न्यायाधीश करेंगे। अदालत अमेरिकी सजा दिशानिर्देशों और कानून में मौजूद दूसरे प्रावध ानों को ध्यान में रखकर सजा तय करेगी। यानी अपराध कबूल करने के बाद भी अंतिम सजा अदालत के फैसले पर निर्भर करेगी। एफबीआई ने मामले को लेकर क्या कहा? अमेरिकी न्याय विभाग के अधिकारियों ने कहा कि बच्चों के यौन शोषण के मामलों के खिलाफ कार्रवाई जारी रहेगी। न्याय विभाग के आपराधिक प्रभाग के सहायक अटॉर्नी जनरल ए. टाइसन डुवा ने कहा कि विजयकुमार का अपराध स्वीकार करना बच्चों के यौन शोषण के खिलाफ जारी लड़ाई में एक और कदम है। एफबीआई के नेवार्क फील्ड ऑफिस की प्रभारी विशेष एजेंट स्टेफनी रॉडी ने कहा कि एजेंसी बच्चों के शोषण और उन्हें नुकसान पहुंचाने वालों की पहचान कर कार्रवाई करने के लिए लगातार काम करती रहेगी। मामले की जांच कौन कर रहा है? इस मामले की जांच एफबीआई का नेवार्क फील्ड ऑफिस कर रहा है। जांच में न्यू जर्सी की बर्गेन काउंटी अभियोजक कार्यालय की साइबर अपराध इकाई भी सहायता कर रही है। अधिकारियों के अनुसार, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों से मिली सामग्री और डिजिटल जांच मामले में अहम रही। विजयकुमार के अपराध स्वीकार करने के बाद अब मामले का अगला बड़ा चरण सजा का निर्धारण है, जो जनवरी 2027 में होगा।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक
(तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता
स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित
सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332
आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466
Email : shaharsamta@gmail.com

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र
शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र
मोबाईल नम्बर 9190052 39332
919450482227